Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

असंकियाइं संकंति,
संकियाइं असंकिणो।

दिग्मूढ प्राणी अशंकनीय के प्रति शंका करते हैं और शंकनीय के प्रति अशंकित रहते हैं।

• नई दिल्ली • वर्ष 22 • अंक 47 • 30 अगस्त, - 5 सितंबर, 2021 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 28-08-2021 • पेज : 12 • ₹ 10

दुनिया में जन्म-मरण का चक्र सतत चलता है : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, १६ अगस्त, २०२१

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने ठाणं आगम के दसवें अध्याय की विवेचना करते हुए फरमाया कि इस दसवें अध्ययन में १०-१० की कई बातें उल्लिखित की गई हैं। प्रथम सूत्र में पहली बात लोक स्थिति के बारे में बताई गई है।

आकाश के दो विभाग हैं–लोकाकाश-अलोकाकाश, आकाश अपने आपमें अनंत है, अनादि है, एकाकार है। आकाश का कोई ओर-छोर नहीं होता। परिस्थिति के संदर्भ में आकाश के विभाग भी किए जा सकते हैं। आकाश और धरती को अलग-अलग संदर्भ में बाँटा जा सकता है। विभाजन की कहीं-कहीं उपयोगिता भी होती है।

लोक-अलोक में छोटा लोक है। अलोकाकाश तो अनंत है। उसमें छोटा सा टापू की तरह लोक है। लोकाकाश इसलिए है कि इसमें जीव-पुद्गल दिखाई देते हैं। और भी द्रव्य हैं। विभाजन का आधार है, षड्-द्रव्यात्मक। आकाश के जिस भाग में छहों द्रव्य होते हैं, वह लोकाकाश है। जहाँ केवल आकाश है और कोई द्रव्य नहीं है, वह अलोकाकाश है।

यहाँ शास्त्रकार ने दस बातें लोक स्थिति की बताई है। लोक का स्वभाव कैसा है। लोक में सब स्वाभाविक है, उसका अपना स्वभाव है। लोक का पहला स्वभाव है कि

यहाँ जीव बार-बार मरते हैं और वहीं लोक में बार-बार प्रत्युत्पन्न होते हैं। यह एक प्रकृति है कि जीव की मृत्यु होती है। कोई प्राणी स्थायी नहीं है। तीर्थंकरों का भी शरीर एक दिन छूटता है। सब प्राणी अस्थायी हैं, अमर कोई नहीं है। केवल मृत्यु नहीं है, संसारी अवस्था में जन्म भी होता है।

लोक का दूसरा स्वभाव है कि जीवों के पाप कर्म का बंध होता है। ज्ञानावरणीय आदि कर्मों का बंध संसारी अवस्था में होता है। शुभ योग में लगे हुए हैं, उनके भी पाप कर्म का बंध भीतर में हो रहा है। तीसरी बात है–जीवों के प्रतिक्षण, सदा मोहनीय पाप-कर्म का बंध होता है। मोहनीय कर्म पाप कर्मों में सेनापति है।

चौथी बात बताई है कि ऐसा कभी न तो अतीत में हुआ है, न हो रहा है और न कभी होगा कि जीव-अजीव बन जाए और अजीव जीव बन जाए। पाँचवीं बात है कि ऐसा कभी न हुआ है, न हो रहा है और न होगा कि त्रस जीवों का व्यवच्छेद हो जाए, सब जीव स्थावर हो जाए। स्थावर जीवों का व्यवच्छेद हो जाए और सब जीव त्रस बन जाएँ। दुनिया में हमेशा स्थावर और त्रस प्राणी रहते हैं। दोनों का अस्तित्व हमेशा रहता है।

छठी बात है कि ऐसा कभी नहीं होता है कि लोक अलोक बन जाए या अलोक लोक हो जाए। सातवीं स्थिति है कि ऐसा भी कभी नहीं होता कि लोक अलोक प्रविष्ट हो जाए या अलोक लोक में प्रविष्ट हो जाए। आठवीं व्यवस्था है कि जहाँ लोक है, वहाँ जीव है और जहाँ जीव है, वहीं लोक है। नौवीं व्यवस्था है जहाँ जीव और पुद्गलों की गति पर्याय है, वहाँ लोक है, जहाँ लोक है वहाँ जीव और पुद्गलों का गति पर्याय है।

(शेष पृष्ठ २ पर)

क्रोध पर विजय प्राप्त करना परमवीरता है : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, २१ अगस्त, २०२१

कषाय विजेता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देषणा प्रदान करते हुए फरमाया कि शास्त्र में गुस्से के बारे में बताया गया है। गुस्सा सामान्य आदमी को प्रतिकूल परिस्थिति के उत्पन्न हो जाने पर आ जाता है। गुस्से के अनेक प्रकार या अनेक स्तर भी होते हैं। एक गुस्सा चिंतनपूर्वक सत्यक्ष्य, कृत्रिम रूप में ऊपरी तौर पर किया जाता है। दूसरा गुस्सा मन में आवेश के रूप में आता है, उस पर नियंत्रण करना भी व्यक्ति के लिए, स्वयं के लिए मुश्किल हो जाता है। फिर व्यक्ति कुछ भी कर देता है।

गुस्सा किसी भी रूप में है, वो कषाय का एक प्रकटीकरण है। परंतु गुस्से-गुस्से में अंतर होता है। यों तो गुस्सा मोहनीय कर्म का ही एक अंग है। भीतर में मोहनीय कर्म न हो तो गुस्सा आ ही नहीं सकता। आवेश का उपादान तो भीतर में मोहकर्म ही है पर कुछ निमित्त मिल जाते हैं, जिससे गुस्सा उभार को प्राप्त हो जाता है। परंतु विशेष बात यह होती है कि निमित्त के मिलने पर भी आदमी शांत रह सके।

गुस्सा करना कोई बड़ी बात नहीं है। गुस्से के संदर्भ में आदमी की तीन स्थितियाँ होती हैं। एक तो आदमी इतना कमजोर है कि कुछ बोल ही नहीं सकता। मन में तो आक्रोश है, पर बोलने पर नुकसान हो सकता है। वह एक विवशता की स्थिति है। दूसरी स्थिति है–सामने वाला बोलता है, तो बोलने की क्षमता है, डर नहीं है। सामने वाले को दो की चार सुना देता है।

तीसरी स्थिति यह है कि सामने वाला कुछ अंट-शंत बोल रहा है, मेरे में वापस जवाब देने की क्षमता भी है, फिर भी मेरा धर्म है, सहन करना। वापस कुछ नहीं बोलना, शांत रहता है। यह सबसे उत्तम स्थिति है।

(शेष पृष्ठ २ पर)

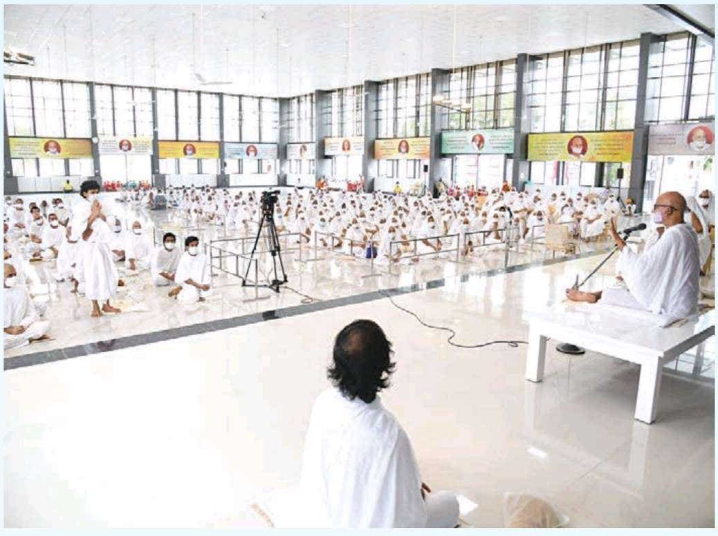

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
30 अगस्त - 5 सितंबर, 2021

✦ *व्यक्ति यह ध्यान दे कि जीवन में बुराइयाँ न पनपें और जो बुराइयाँ जीवन में प्रवेश कर चुकी हैं, उन्हें छोड़ने का प्रयास करना चाहिए।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

शब्द मिष्ट और भाषा शिष्ट हो तो व्यक्ति विशिष्ट बन जाता है : आचार्यश्री महाश्रमण

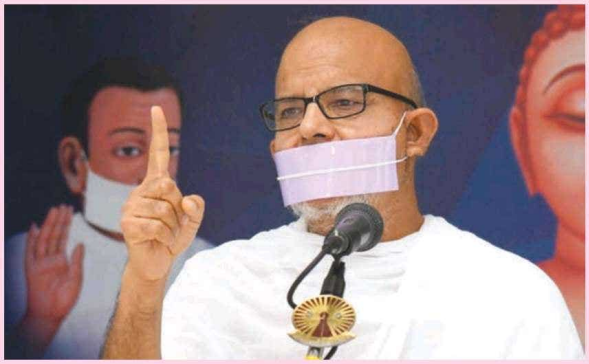

भीलवाड़ा, २० अगस्त, २०२१

अध्यात्म के सुमेरू आचार्यश्री महाश्रमण जी ने ठाणं आगम के दसवें अध्याय के दूसरे सूत्र की व्याख्या करते हुए फरमाया कि आदमी के पास कान श्रवण शक्ति का साधन होता है। इंद्रियों की दृष्टि से एक प्रकार से उच्चस्तरीय विकसित प्राणी है। एकेंद्रिय से लेकर चतुरिन्द्रिय प्राणी के कान नहीं होते हैं।

श्रोतेंद्रिय, शब्द, श्रवण इन तीनों का संबंध है। कान एक इंद्रिय है, इसका ग्राह्य तत्त्व है–शब्द और उसको ग्रहण करना, सुनना यह उसका व्यापार है। हमारी दुनिया में शब्द का बड़ा महत्त्व है। पाँच विषय हैं–शब्द, रूप, गंध, रस और स्पर्श। वक्ता को श्रोता से जोड़ने वाला और श्रोता को वक्ता से जोड़ने वाला शब्द है। वक्ता और श्रोता के बीच में शब्द होता है।

शब्द के दस प्रकार हैं–(१) निर्हारी–घोषवान शब्द जैसे घंटा का। शब्द जीव का भी होता है, अजीव का भी होता है, शब्द मिश्र भी होता है। (२) पिण्डिम–घोष वर्जित शब्द जैसे नगाड़े की ध्वनि। (३) रूक्ष–जैसे कौवे का। (४) भिन्न–वस्तु के टूटने से होने वाला शब्द। (५) जर्जरित–जैसे तार वाले बाजे का शब्द। (६) दीर्घ–जो दूर तक सुनाई दे जैसे मेघ का शब्द। (७) ह्रस्व–सूक्ष्म शब्द, जैसे वीणा का। (८) पृथकत्व–अनेक बाजों का संयुक्त शब्द। (९) काकणी–काकली, सूक्ष्म कंठों की गीत ध्वनि। (१०) किंकिणी स्वर–घूघरों की ध्वनि।

आदमी का शब्द-भाषा मिष्ट से, शिष्ट हो तो मानो भाषा विशिष्ट हो जाती है। मौन का भी महत्त्व है, मौन से कुछ लाभ हो सकते हैं। बोलना या न बोलना बड़ी बात नहीं है, बड़ी बात में इसको मानता हूँ कि बोलने व न बोलने में विवेक रखना। कहीं बोलने का महत्त्व, कहीं न बोलने का महत्त्व है। कहाँ, क्यों, कैसे बोलना या नहीं बोलना–इन चीजों का विवेक रहे।

साधु प्रवचन देते हैं, लोगों को ज्ञान मिलता है, तो उनका बोलना भी अच्छा है। कहीं न बोलना भी ठीक है। सांसारिक बातों में साधु रुचि न लें। कैसे बोलना, बोलने का प्रयोजन क्या है, उसका विवेक हो। अपेक्षा हो तो मौन भी रखना चाहिए। अनावश्यक न बोलना बड़ा मौन है। शब्द के साथ हम जुड़े हुए हैं। शब्द ज्ञान का माध्यम है।

आधार रहित बात मत लिखो, अनपेक्षित मत बोलो, यह जीवन के लिए अच्छी बात हो सकती है। शब्द का प्रयोग भी कैसे करें? एक शब्द प्रसन्नता पैदा करने वाला बन सकता है, एक शब्द खिन्नता पैदा करने वाला बन सकता है। आदमी तोलकर, सोचकर बोले, तरीके से बात करे। शब्दों का संयोजन अच्छा हो। वाणी में सरलता हो। प्रेम से बोलोगे तो मैं हार मान लूँगा।

शब्द का हम अच्छा उपयोग करें। शब्द तो बड़ा उपकारी बन सकता है। चित्त समाधी पहुँचाने वाला, प्रसन्नता पैदा करने वाला बन सकता है।

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। साध्वी संवरयशा जी ने पूज्यप्रवर से ३० की तपस्या के प्रत्याख्यान किए। छीतरमल मेहता ने ३३ की तपस्या के प्रत्याख्यान लिए।

मुख्य नियोजिका जी ने सम्यक्त्व के लक्षणों के बारे में विस्तार से समझाया। कर्मों का फल सबको मिलता है। सबको कर्म के फल भोगने पड़ेंगे। इसलिए भगवान ने गौतम से कहा है–हे गौतम! क्षण भर भी प्रमाद मत करो। जो जागरूक रहता है, उसके कर्म का बंधन शिथिल होता है।

साध्वी संप्रतिप्रभा जी ने सुमधुर गीत व सुंदर कहानी की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया। रमेश हिरण ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

मोहनीय कर्म को परास्त करने की साधना अध्यात्म की साधना है : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, १८ अगस्त, २०२१

अमृत पुरुष आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि जैन दर्शन में कर्मवाद का सिद्धांत है। आठ कर्म प्रज्ञप्त हैं जिनमें कर्मों का राजा, प्रमुख कर्म मोहनीय कर्म है। अध्यात्म की साधना मुख्यत्व मोहनीय कर्म के विलय की साधना है। क्योंकि जितने भी पाप-कर्म लगते हैं, उन सारे पाप कर्मों का जनक, लगाने वाला यह मोहनीय कर्म मुख्यतया होता है।

अध्यात्म की साधना है, मोहनीय कर्म को परास्त करने का प्रयास। मोहनीय कर्म के दो मूल भेद हैं–दर्शन मोहनीय और चारित्र मोहनीय। दर्शन मोहनीय के तीन प्रकार सम्यक्त्व मोहनीय, मिथ्यात्व मोहनीय और मिश्र मोहनीय तीन प्रकार हो जाते हैं। चारित्र मोहनीय के २५ प्रकार होते हैं।

चारित्र मोहनीय को दो भागों में विभक्त किया गया है–कषाय वेदनीय और नो कषाय वेदनीय। कषाय मूल चार हैं–क्रोध, मान, माया, लोभ। इन चारों के फिर चार भेद–अनंतानुबंधी अप्रत्याख्यानी, प्रत्याख्यानी और संजवलन है। अनंतानुबंधी कषाय के कारण सम्यक्त्व की प्राप्ति नहीं हो सकती।

गुणस्थानों का जो विकास होता है इनमें १२ गुणस्थानों तक तो मोहनीय कर्म का ही सहारा है। जैसे-जैसे मोहनीय कर्म पतला पड़ता है, त्यों-त्यों वो गुणस्थान ऊपर के आते जाते हैं। दर्शन मोहनीय का उपशम या क्षय हो गया तो चतुर्थ गुणस्थान की प्राप्ति हो जाती है। चतुर्थ गुणस्थान में क्षायिक सम्यक्त्व भी हो सकता है। मोहनीय कर्म और गुणस्थानों को तराजू के रूप में देखा जा सकता है। ज्यों-ज्यों मोहनीय कर्म दबेगा, त्यों-त्यों गुणस्थानों वाला भाग ऊपर जाएगा। मोहनीय का पात्र नीचे जाएगा।

चतुर्थ गुणस्थान तीन प्रकार का हो जाता है। उपशम सम्यक्त्व वाला, क्षायिक सम्यक्त्व वाला गुणस्थान और क्षायोपशमिक, सम्यक्त्व वाला गुणस्थान। क्षायिक समान वाला सबसे बढ़िया चतुर्थ गुणस्थान है। ये प्राप्त होने पर चौथे से नीचे ह्रास नहीं होगा। आगे ऊपर विकास ही होगा। एक दिन केवलज्ञान होना ही है।

अनंतानुबंधी कषाय की चार प्रकृति और दर्शन मोहनीय की तीन प्रकृति का विलय होता है, तब सम्यक्त्व की प्राप्ति होती है। प्रत्याख्यानी और कमजोर पड़ेगा तो गुणस्थान का पलड़ा और ऊपर आएगा। पाँचवाँ गुणस्थान प्राप्त होगा। प्रत्याख्यानी का विलय होगा तो छठा गुणस्थान प्राप्त होगा।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

दुनिया में जन्म-मरण का चक्र सतत...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

दसवीं व्यवस्था है–समस्त लोकांतों के पुद्गल दूसरे रूक्ष पुद्गलों के द्वारा, अबद्ध पार्श्व स्पृष्ट (अबद्ध और अस्पृष्ट) होने पर भी लोकांत के स्वभाव से रूक्ष हो जाते हैं, जिससे जीव और पुद्गल लोकांत से बाहर जाने में समर्थ नहीं होते। जीव और पुद्गल लोक की सीमा में ही रहेंगे, लोक से बाहर नहीं जाएँगे। यह सृष्टि की व्यवस्था बताने वाला सूत्र है।

मुनि चिरंजीलाल जी का प्रसंग विस्तार से समझाया।

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। पूज्यप्रवर ने सम्यक्त्व दीक्षा ग्रहण करवाई।

मुख्य नियोजिका जी ने फरमाया कि जहाँ प्रेम है, वहाँ प्रसन्नता और सफलता भी होती है। वहाँ का वातावरण भी मधुर होता है। पारिवारिक सदस्यों में सौहार्द हो। परिवार में धैर्य का विकास हो।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में नरेश नाहटा, ओम कोठारी, एन०एस० राजपुरोहित जो जनरल मेजर हैं, उषा शिशोदिया, प्रज्ञ खांटेड़, मुदित बड़ोला ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

पूज्यप्रवर ने मेजर जनरल राजपुरोहित जी को संबोधन देते हुए फरमाया कि भारत में नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा बनी रहे, आध्यात्मिकता का क्रम भी भारत में चलता रहे। भारत में खूब शांति रहे। मैत्री-सौहार्द का भाव रहे।

व्यवस्था समिति द्वारा मेजर साहब का साहित्य से सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

क्रोध पर विजय प्राप्त करना...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

क्षमा वीरस्य भूषणम्। अहिंसा, क्षमा, समता अपना धर्म है। जो बोल नहीं सकता, वो तो दयनीय आदमी है। उसमें ताकत नहीं है। उसमें तो कायरता-निर्बलता है। जो बोलता है, उसमें थोड़ी वीरता है। पर वह परम वीर है, जो ताकत होने पर भी नहीं बोलता।

आज चतुर्दशी है, हाजरी का भी उपक्रम है। चारित्रात्माओं का धर्म है, सहन करना। अनावश्यक किसी को कष्ट पहुँचे ऐसी बात ही नहीं बोलना। हमारा वाणी का संयम है, तो व्यवहार अच्छा रह सकता है। हम परम वीरता की ओर आगे बढ़ें। ईंट का जवाब पत्थर से देना साधु-संस्था का काम नहीं।

हमारा आदर्श है, ईंट का जवाब फूलों से दो। गड़े मुर्दे न खोदें। यह एक प्रसंग से समझाया। छोटी बातों को महत्त्व न दें। व्यवहार में उदारता हो। किसी के प्रति हमारा असद् व्यवहार न हो जाए। किसी से सिद्धांतों के बारे में चर्चा करनी है, तो गुस्सा न करें। गुस्सा करना हार है। अपना आधार रखा जा सकता है।

लगभग गुस्सा कहीं काम का नहीं है। बात भले कड़ी हो, शांति से बात कह दो। समता भाव में रहने का प्रयास करें। शास्त्रकार ने जो दस बातें बताई हैं, उनसे यही प्रेरणा लेनी चाहिए। आचार्यप्रवर ने मुनि कुमार श्रमण जी से गुस्से के बारे में उनके चिंतन को पूछा। मुनि उदित कुमार जी स्वामी से भी मंतव्य पूछा। दोनों संतों ने अपने भाव व्यक्त किए। छोटे साधु-साध्वियों के भी मंतव्य लिए। आवेश में आकर डाँटना काम का नहीं है। गुस्सा आदमी का शत्रु है।

हाजरी का वाचन

पूज्यप्रवर ने हाजरी का वाचन करते हुए मर्यादावली को समझाया। ईर्या-समिति और मौन का संबंध है। विहार में चलते हुए मौन रहें तो अच्छी साधना हो सकती है। गृहस्थ भी चलते हुए फोन पर बात न करें। प्रतिक्रमण में बातें न करें। यह रोज की कमाई है। उच्चारण शुद्ध रहे। दो काम साथ में न करें। आचार-विचार और मर्यादाओं को समझाया।

साधु-साध्वियों द्वारा लेख पत्र का वाचन किया गया। पूज्यप्रवर ने शिक्षाएँ फरमायीं। पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। छीतरमल मेहता, सागरमल मोगर, कुशलराम सेठिया, मधु सांखला, गौतम बोहरा ने मासखमण तपस्या के पच्चक्खाण लिए।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि जहाँ संदेश होता है, वहाँ विद्या नहीं सीखी जा सकती। व्यक्ति में गहरी आस्था-श्रद्धा होती है, तो देवता भी उसका सहयोग करते हैं। अच्छी संगति से भावों में बदलाव आ सकता है।

साध्वीवर्या जी ने भगवान महावीर और गौतम स्वामी के संवाद को बताया। साधु भाषा का विवेक रखे। अनावश्यक और कठोर बोलने पर व्यक्ति सत्य से दूर हो जाता है।

साध्वी सुषमा कुमारी जी ने बहनों को नवरंगी तपस्या की प्रेरणा दी।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में राकेश बोहरा, शंकरलाल हिरण, सुरेश चोरड़िया, निर्मला लोढ़ा, विजया सुराणा, मंजु नोलखा ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

राष्ट्र के भौतिक विकास के साथ अध्यात्मिक विकास भी जरूरी : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, १५ अगस्त, २०२१

१५ अगस्त का पावन दिन स्वतंत्रता दिवस। आज भारत देश का ७५वाँ स्वतंत्रता दिवस पूरा राष्ट्र मना रहा है। आज से ७४ वर्ष पहले हमारा देश अंग्रेजों से आजाद हुआ था। हमारा देश निरंतर प्रगति करते हुए पूरे विश्व में अपना परचम फहराए, यही मंगलकामना।

आत्मा की आजादी की ओर अग्रसर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देषणा प्रदान करते हुए फरमाया कि वज्र ऋषभ नाराच संहनन वाले तथा सम चतुरस्र संस्थान वाले पुरुषादानीय अर्हत् पार्श्व की ऊँचाई नौ रत्नि की थी।

इस एक वाक्य में सार काफी ग्रहण किया जा सकता है। प्रभु पार्श्व जो २३वें तीर्थंकर इस भरत क्षेत्र में इस अवसर्पिणी में हुए थे, उनकी ऊँचाई नौ रत्नि की थी। रत्नि यानी बंध मुट्ठी हाथ की लंबाई कोहनी तक।

आत्मा का घर शरीर है। इस सूत्र में चार विश्लेषण भगवान पार्श्व के बताए गए हैं—पहला है—वज्र ऋषभ नाराच संहनन वाले। उनका शरीर कितना मजबूत था। महत्त्वपूर्ण छः संहननों में ये सर्वाधिक मजबूत संहनन कहा जा सकता है।

दूसरा विश्लेषण बताया गया है—प्रभु पार्श्व के शरीर का संस्थान सम-चतुरस्र था। छः संस्थानों में ये पहला बहुत बढ़िया संस्थान होता है। तीसरा विश्लेषण है—पुरुषादानीय थे, पुरुषों के द्वारा ग्रहणीय और अनुकरणीय थे। आज भी भगवान पार्श्व बहुत लोकप्रिय हैं। संभवतः दुनिया में जितने मंदिर भगवान पार्श्व के मिलेंगे, शेष २३ तीर्थंकरों में से किसी के नहीं मिलेंगे।

स्तुति और मंत्र भी जितने भगवान पार्श्व के बारे में मिलेंगे, संभवतः अन्य २३ तीर्थंकरों के बारे में नहीं मिलेंगे। कल्याण मंदिर, उवसग्गहर स्त्रोत आदि कितने-कितने स्तुतियाँ-यंत्र आदि हैं। भगवान पार्श्व की जितनी आराधना की जाती है, शायद अन्य तीर्थंकरों की जाती है या नहीं। इससे यह लग सकता है कि २४ तीर्थंकरों में से भगवान पार्श्व सबसे लोकप्रिय तीर्थंकर है।

हो सकता है विघ्न-बाधा या भौतिक आकांक्षा भगवान पार्श्व के साथ जुड़ी है। चौथा विश्लेषण है—अर्हत् वीतरागता केवलज्ञान, केवलदर्शन है। मैं छोटे से इस सूत्र से यह ग्रहण कर सकता हूँ कि संहनन की मजबूती। यानी ऊँची साधना के लिए शरीर की भी मजबूती चाहिए। तीर्थंकरत्व पाना है तो साथ में शरीर भी ऐसा मजबूत होता है। वज्र ऋषभ नाराच शरीर की मजबूती का और समचतुरस्र शरीर की सुंदरता का द्योतक है।

लोकप्रिय वह होता है, जो दूसरों के लिए कुछ विशेष करता है। अर्हत यानी वीतरागता, शक्ति-संपन्नता। हमारे शरीर में शरीर की सक्षमता और शरीर की सुंदरता को इस सूत्र से ग्रहण कर सकते हैं। मैं ज्यादा महत्त्व शरीर की सक्षमता को देना चाहता हूँ। सुंदरता नंबर दो पर है। सक्षमता नहीं है तो सुंदरता क्या काम आएगी?

दूसरों पर उपकार करने के लिए तुम कितना समय लगाते हो, कितना श्रम करते हो, यह देखो। सामुदायिक चेतना हो। लोकप्रियता का एक कारण है, दूसरों के लिए कुछ करना। साधु-साध्वियाँ सोचें कि मेरी राग-द्वेष मुक्ति की साधना कैसी है? कषायमंदता कैसी है? छलना-वंचना व्यवहार में तो नहीं है। कथनी-करणी में विषमवादिता नहीं है न। लोभ-लालच न हो। संग्रह भी कम हो। साधु अपोवही रहे।

भगवान पार्श्व आगे बढ़ सकते हैं, तो हम क्यों नहीं बढ़ सकते? प्रयास करते रहें। व्यवहार अच्छा-शांत रहे। जो आत्मा वीतराग है, अभय है, वो आत्मा कितनी सुखी है। सुंदरता हमारे शरीर में नहीं, हमारी कार्य प्रणाली में भी रहे। हमारे भीतर भावों में सुंदरता रहे। हम सक्षमता, सुंदरता, लोकप्रियता और वीतरागता के विषय में भगवान पार्श्व का अनुगमन करने का प्रयास करें।

आज पंद्रह अगस्त है। भारत की आजादी का यह पचहत्तरवाँ स्वतंत्रता दिवस है। भारत के लिए इस दिन का बहुत महत्त्व है। स्वतंत्रता बाह्य दृष्टि से और देश की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हो सकती है। भारत एक अच्छा देश है। भारत एक अध्यात्म युक्त राष्ट्र है। यहाँ कितने तपस्वी, महर्षि, संत हुए हैं। जिन्होंने उच्चतम साधना की थी।

भारत के पास ज्ञान का खजाना बहुत है। भारत में धार्मिक संगठन भी कितने हैं। भारत के पास ग्रंथ संपदा, संत संपदा और पंथ संपदा है। यह महत्त्वपूर्ण चीज है। गुरुदेव तुलसी ने भारत की आजादी के बाद अणुव्रत चलाया। संत पुरुष कोई बात कहते हैं तो उनकी बात का सम्मान भी कुछ अंशों में भारत में मिलता है। इससे लोगों को सत्पथ पर चलने की प्रेरणा मिल जाती है।

पंथ के साथ जुड़ने से नियंत्रण हो सकता है। ये भारत के उज्ज्वल पक्ष की बातें हैं। राष्ट्र को भौतिक विकास चाहिए। साथ में आर्थिक विकास भी चाहिए साथ में नैतिकता, आध्यात्मिकता और शिक्षा भारत के लिए अपेक्षित है। तो भारत देश और अच्छाई की दिशा में आगे बढ़ सकता है।

स्वतंत्रता का एक उच्च कोटि का संदर्भ है—स्व-अनुशासन। अपने पर अपना अनुशासन। व्यक्ति-व्यक्ति आत्मानुशासन वाले बनें। राग-द्वेष के वशीभूत होना परतंत्रता है। निज पर शासन फिर अनुशासन हो। स्वतंत्रता दिवस गौरव के साथ प्रेरणा ग्रहण करने का दिन है। जिस दिन हमें पूर्ण आत्मतंत्रता मिलेगी वो दिन हमारे लिए सहज उत्तम होगा।

अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान देश को आंतरिक स्वतंत्रता दिलाने में सहयोगी बन सकते हैं। भारत में खूब शांति रहे। हमारी अभय की चेतना, संयम की चेतना पुष्ट रहे। हम कल्याण की दिशा में आगे बढ़ते रहें। यह काम्य है।

चतुर्मास के पश्चात की यात्रा की घोषणा

पूज्यप्रवर ने फरमाया कि चतुर्मास के बाद विहार करना है। २५ नवंबर से ६ जुलाई तक का यात्रा-पथ पूज्यप्रवर ने घोषित किया। पूज्यप्रवर ने फरमाया कि आवश्यकता अनुसार इस यात्रा में परिवर्तन किया जा सकता है। अहिंसा यात्रा की परिपूर्णता की घोषणा दिल्ली में करने का विचार है।

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी ने कहा कि भारत देश ऋषियों की भूमि है। विश्व में जितने देश हैं, भारत का नाम गौरव से लिया जाता है। यहाँ महावीर और बुद्ध की वाणी गूँजती रही है। वेदों की ऋचाएँ गूँजती रही है। अमृत स्वरूपा गंगा नदी है। भारत को अनेक प्रकार के संघर्ष देखने पड़े हैं।

मुख्यनियोजिका जी ने कहा कि आज के दिन हिंदुस्तान पराधीनता की बेड़ियों से मुक्त हुआ था। स्वतंत्रता के वातावरण में उसने प्रवेश किया था। हर व्यक्ति स्वतंत्र होना चाहता है।

साध्वीवर्या जी ने कहा कि व्यवहार जगत में देख रहें हैं कि आदमी तो भ्रम में जी रहा है। हम अंग्रेजों की गुलामी से तो मुक्त हो गए पर इंद्रिय विषय, कषाय वृत्तियों के हम अभी भी गुलाम बने हुए हैं।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में निर्मल सुतरिया, गरिमा कोठारी, वर्षा बाफना, निकिता वागरेचा, ज्योति-आकांक्षा नाहर ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

मोहनीय कर्म को परास्त करने की साधना...

(पृष्ठ २ का शेष)

और साधना में निखार आएगा फिर सातवाँ आएगा। कषाय ज्यों-ज्यों कमजोर होंगे ८वाँ, नौवाँ, दसवाँ आएगा। दसवाँ आने पर मात्र सूक्ष्म लोभांश बचा है। आठवें गुणस्थान से दो रास्ते निकलते हैं—उपशम श्रेणी और श्रावक श्रेणी का रास्ता। जिसने उपशम श्रेणी का रास्ता लिया है, वह जीव दसवें के बाद ग्यारहवें गुणस्थान में जाता है। ग्यारहवें के बाद उसे नीचे गिरना ही पड़ेगा। कोई विकल्प नहीं है।

उपशम श्रेणी का रास्ता आगे नहीं जाता है। उसकी अंतिम सीमा है, ग्यारहवाँ गुणस्थान? नीचे आएगा ही। जिस जीव ने क्षपक श्रेणी का रास्ता लिया है, वह दसवें के बाद छलाँग भरेगा, ग्यारहवें में नहीं जाएगा, सीधा बारहवें में ही जाएगा। वहाँ से आगे बढ़ेगा और केवलज्ञान प्राप्त करेगा। अनंतराय की स्थिति आ जाएगी। बारहवें गुणस्थान तक मोहनीय कर्म के विलय की कहानी है।

मोह मजबूत है, तो गुणस्थान का पलड़ा नीचे आ जाएगा। मोह पतला पड़ेगा तो गुणस्थान का पलड़ा ऊँचा होता जाएगा। अमोह का वजन बढ़ेगा तो गुणस्थान का पलड़ा ऊँचा होगा। गुणस्थान का संबंध मोहकर्म से या आश्रव से या संवर और निर्जरा के साथ जुड़ा हुआ है। विस्तार से समझें तो हमें यह आलोक देखने को मिल सकेगा कि गुणस्थान बढ़ने का क्या कारण है?

यहाँ शास्त्रकार ने नौ नो कषायों का नाम उल्लेखित किया है, नो का संस्कृत या अंग्रेजी में मतलब नहीं होता है। नो का मतलब आंशिक निषेध भी होता है। साहचर्य भी नो का अर्थ है। यहाँ नो कषाय में नो का मतलब बताया है—साहचर्य। ये नो कषाय मूल चार कषाय के साथ रहकर अपना परिणाम दिखाते हैं। जैसे बुध ग्रह स्वयं अपना फल नहीं देता है। दूसरे ग्रहों के साथ रहकर वह अपना फल देता है।

कषाय है तभी नो कषाय फल देते हैं। कषाय नहीं है, तो फिर नो कषाय का कुछ भी नहीं होता है। कषाय मुख्य है, ये नो कषाय उसके सहवर्ती है। वैसे लोभ में इनका समाविष्ट हो जाता है। पर कभी स्पष्टता के लिए पृथकता की गई है, अकषाय की साधना करने वाला इनसे बच सकता है। साधना के क्षेत्र में हमें इन नो कषायों से भी विरत रहने का अभ्यास रखना चाहिए। ये हमारे लिए कल्याणकारी हो।

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। साध्वी संवरयशा जी ने भी तपस्या के प्रत्याख्यान लिए। छीतरमल मेहता ने ३१ की तपस्या के प्रत्याख्यान लिए।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि अनुकंपा दो प्रकार की होती है—लौकिक व लोकोत्तर या सावद्य और निरवद्य। सावद्य अनुकंपा संसार बढ़ाने वाला है। निरवद्य अनुकंपा मोक्ष की ओर ले जाने वाली है।

साध्वीवर्या जी ने कहा कि हम संतोष को धारण करें। जिसने मन से संतोष धारण कर लिया वह लोभ को शांत कर देता है और कल्याण की दिशा में आगे बढ़ सकता है।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में नीलम कोठारी, जेठमल चौधरी प्रभारी प्रेक्षाध्यान, संपत बोथरा, प्रज्ञा-श्रुति रांका ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

नमिमुनि ने बनाया कई आचार्यों के शासनकाल का तप कीर्तिमान

इंदौर।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी स्वामी के सान्निध्य में मुनि नमिकुमार जी ने ७१ वर्ष की अवस्था में ६२ दिन की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। इस अवसर पर मुनिश्री ने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि मुनि नमिकुमार जी ने मात्र पाँच वर्ष में एक से पंद्रह तक की तप लड़ी के साथ आठ मासखमण वह ६२ दिन की तपस्या करके आचार्यश्री महाश्रमण जी के शासनकाल में एक कीर्तिमान बना दिया। मुझे लगता है कि कई आचार्यों के शासनकाल का इतिहास बन गया। तपस्या काल में जाप, ध्यान, स्वाध्याय के साथ स्वावलंबी जीवन जीना बहुत बड़ी बात है। यह सब पूज्यप्रवर के आशीर्वाद से ही संभव हो सका। चालीस की तपस्या पर मैंने पूज्य से निवेदन करवाया कि नमिमुनि तपस्या में आगे बढ़ना चाहते हैं उसके लिए पूज्यप्रवर की अनुमति चाहिए। पूज्यप्रवर ने अर्जी पर मर्जी करते हुए संदेश प्रदान किया कि उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी स्वामी के लिए अनुकूलता लगे तो मुनि नमिकुमार जी तपस्या में आगे बढ़ सकते हैं। गुरुदेव के अमृतमय आशीर्वाद से ही यह इतना लंबा तप सानंद संपन्न हो सका। इस अवसर पर साधु-साध्वियों की जो प्रमोद भावना प्राप्त हुई वह भी नमि मुनि के लिए बड़ी सहायक बनी।

बहुश्रुत परिषद के संयोजक प्रो० मुनि महेंद्र कुमार जी, मुनि ज्ञानेंद्र कुमार जी, मुनि चैतन्य कुमार जी, मुनि प्रशांत कुमार जी, मुनि दिनेश कुमार जी, मुनि हिमांशु कुमार जी, मुनि योगेश कुमार जी, मुनि सुधाकर जी, मुनि सिद्धकुमार जी। शासनश्री साध्वी रत्नश्री जी, शासनश्री साध्वी मदनकुमारी जी, शासनश्री साध्वी मदन कंवर जी, शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी, शासनश्री साध्वी मंजुरेखा जी, शासनश्री साध्वी सोमलता जी, साध्वी लावण्यश्री जी, साध्वी अणिमाश्री जी, साध्वी कीर्तिलता जी, साध्वी कनकरेखा जी, साध्वी परमयशा जी, साध्वी मंगलप्रज्ञा जी एवं प्रदीप छाजेड़, प्रकाश डाकलिया, तनसुख बैद, जितेंद्र घोषल, महिमा पटावरी आदि-आदि के गीत व उद्गार प्राप्त हुए। इस अवसर पर मुनि कमल कुमार जी, मुनि अमन कुमार जी ने भी भावपूर्ण गीत प्रस्तुत कर सबको मंत्रमुग्ध कर दिया।

मुनि नमि कुमार जी ने अपने वक्तव्य में सबके प्रति आभार ज्ञापन कर सबको आश्चर्यचकित कर दिया। कार्यक्रम को सफल बनाने में जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद का महनीय सहयोग प्राप्त हुआ। स्थानकवासी संप्रदाय के संत सुमति मुनि के सहयोगी जय सुंदर मुनि के विचारों को भी यशवंत सेठ ने पढ़कर सुनाया।

तेरापंथ धर्मसंघ की ६११ शाखाओं की सर्वोच्च संस्था जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष सुरेश गोयल ने अगले दिन उपस्थित होकर मुनिश्री के तप के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना प्रकट की। सभा मंत्री प्रेम बैद ने मुनिश्री के प्रति अपनी भावना व्यक्त की। कार्यक्रम संघ प्रभावक रहा।

✦ आस्तिक विचारधारा का आधार अध्यात्म है, जबकि नास्तिक विचारधारा भौतिकवाद से संपृक्त है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

१५ अगस्त का कार्यक्रम

विवेक विहार, दिल्ली।

आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में विवेक विहार महिला कॉलेज के पास निर्मित कन्या सुरक्षा सर्किल पर महिला मंडल व दिल्ली की बहनों द्वारा ध्वजारोहण किया गया। कार्यक्रम में ओसवाल समाज के अध्यक्ष बाबूलाल दुगड़, शाहदरा सभा के अध्यक्ष राजेंद्र सिंघी, उपाध्यक्ष तेजकरण बैद एवं पूर्वाध्यक्ष तारा बैंगाणी, उपाध्यक्ष सरोज सिपानी, सहमंत्री सरला बैद, कोषाध्यक्ष प्रेम भंसाली, संयोजिका मंजु बांठिया एवं महिला मंडल की बहनों की उपस्थिति रही। सभी गणमान्य अतिथियों एवं पदाधिकारियों ने भावों की अभिव्यक्ति देते हुए ७५वें स्वतंत्रता दिवस की बधाई दी।

सरला बैद ने सभी पधारे हुए अतिथियों का आभार व्यक्त किया। तत्पश्चात सभी बहनों ने ओसवाल भवन में शासनश्री साध्वी संघमित्रा जी के प्रवचन का श्रवण लाभ लिया तथा ओसवाल भवन के ध्वजारोहण समारोह में मंडल की सहभागिता दर्ज कराई।

लक्ष्य-सर्वात्मना समर्पण की ओर

कांदिवली।

तेरापंथ भवन के प्रांगण में अभातेमम के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल, मुंबई द्वारा शपथ ग्रहण समारोह 'लक्ष्य' सर्वात्मना समर्पण की ओर का आयोजन साध्वी राकेश कुमारी जी एवं साध्वीवृंद के सान्निध्य में संपन्न हुआ।

कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री जी के द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुई। मंगल संगान कांदिवली महिला मंडल द्वारा किया गया। कांदिवली महिला मंडल संयोजिका नीतू नाहटा ने सभी का स्वागत किया।

कन्या मंडल ने डिजाइन योर डेस्टिनी की प्रस्तुति दी। निवर्तमान अध्यक्ष भाग्यश्री कच्छारा ने लक्ष्य यानी लक्षित मंजिल की ओर क्षमता के विकास के पूर्ण उपयोग की बात कही। पूर्वाध्यक्षों के साथ प्रश्नमंच सेशन का संचालन सहमंत्री सरोज सिंघवी ने किया।

वर्ष २०२१-२३ की सभी कार्यकारिणी बहनों द्वारा लक्ष्य थीम सॉन्ग पर प्रस्तुति दी गई। नव निर्वाचित अध्यक्ष रचना हिरण ने अपनी कार्यकारिणी की घोषणा की। मुख्य अतिथि अभातेमम की प्रधान ट्रस्टी शांता पुगलिया ने कार्यकारिणी सदस्यों एवं सभी क्षेत्रीय संयोजिकाओं को शपथ दिलवाते हुए संकल्प सूत्रों का वाचन भी करवाया। कन्या मंडल संयोजिका के पद पर किंजल संचेती, सह-संयोजिका के पद पर जिझा सिसोदिया व काजल मादरेचा को नियुक्त किया। प्रधान ट्रस्टी शांता पुगलिया ने नव मनोनीत पूरी टीम के प्रति मंगलकामना की।

मुंबई महिला मंडल नव निर्वाचित अध्यक्ष रचना हिरण ने मंडल को अत्यधिक गति-प्रगति देने के लिए आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा बताई।

साध्वी मलयविभा जी ने अपने उद्‌बोधन में कार्यकर्ता को कैसा होना चाहिए, उस पर अपना पाथेय दिया। मुंबई महिला मंडल मंत्री अल्का मेहता ने अपने वक्तव्य द्वारा बहनों को २०२३ की पृष्ठभूमि की प्रायोजना में अध्यक्ष रचना के साथ कदम से कदम मिलाकर साथ देने का सभी से आह्वान किया।

शुभकामनाओं के स्वर में निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष कुमुद कच्छारा, साधुमार्गी जैन संघ राष्ट्रीय अध्यक्ष गौतम जैन, तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन अध्यक्ष के०एल० परमार, २०२३ चातुर्मास व्यवस्था समिति अध्यक्ष मदन तातेड़, मुंबई सभा मंत्री विजय पटवारी, लायन्स क्लब से बिपिन आदि ने अपने भाव रखे।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ० दिलीप सरावगी का परिचय प्रियल हिरण ने दिया। डॉ० दिलीप सरावगी ने प्रेरणादायी वक्तव्य दिया। कार्यक्रम का संचालन भारती सेठिया ने किया।

कार्यक्रम के ट्रस्टी प्रकाश देवी तातेड़, प्रेमलता सिसोदिया, मीना सुराणा, कांता तातेड़, निर्मला चंडालिया, बाबूलाल राठौड़, सभा उपाध्यक्ष विनोद बोहरा, मोहन डागा, अभातेयुप मुंबई टीम से दिनेश सिंघवी, योगेश चौधरी, पारस दुगड़, प्रीतम हिरण, अणुव्रत समिति अध्यक्ष कंचन सोनी, ज्ञानशाला आंचलिक संयोजिका सुमन चपलोत, अणुव्रत समिति रायगढ़ संयोजक राजेश मेहता, कांदिवली तेयुप अध्यक्ष मनीष रांका एवं उनकी पूरी टीम की गरिमामय उपस्थिति रही।

इस आयोजन में तारादेवी मीठालाल धाकड़ परिवार कांदिवली का सहयोग रहा। आभार ज्ञापन सहमंत्री संगीता चपलोत ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में कांदिवली महिला मंडल संयोजिका, सह-संयोजिका व उनकी टीम एवं तेयुप का सराहनीय श्रम रहा। लगभग ५०० बहनों की प्रत्यक्ष एवं जूम के माध्यम से उपस्थिति रही।

शपथ ग्रहण समारोह

इचलकरंजी।

आषाढ शुक्ला त्रयोदशी आचार्य भिक्षु जन्मोत्सव व बोधि दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में तेमम, इचलकरंजी की नवगठित कार्यकारिणी का शपथ समारोह आयोजित किया गया। निवर्तमान अध्यक्ष सीमा डागा ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष जयश्री जोगड़, मंत्री प्रज्ञा आंचलिया सहित उनकी पूरी टीम को दायित्व निर्वहन व गोपनीयता की शपथ दिलवाई एवं दायित्व हस्तांतरित किया। साध्वीश्री जी ने नई टीम के प्रति मंगलकामनाएँ प्रेषित की।

प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम

राजाराजेश्वरी नगर।

तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी के सान्निध्य में महिला मंडल द्वारा स्वाध्याय एवं ज्ञानोपार्जन की दृष्टि से आचार्यों के जीवन पर आधारित प्रश्न पत्र का विमोचन किया गया। साध्वीश्री जी ने कहा कि आर०आर० नगर महिला मंडल में तत्त्वज्ञान के प्रति जो अभिरुचि है वह अनुकरणीय है। मंडल की अध्यक्ष लता बाफना, मंत्री सीमा छाजेड़ साध्वीवृंद के निर्देशन में तत्त्वज्ञान श्रावक समाज तक पहुँचा रहे हैं। ये निर्जरा का एक अच्छा उपक्रम है। इस साप्ताहिक प्रश्नोत्तरी के माध्यम से सभी को तेरापंथ की यशस्वी आचार्य परंपरा को सहज रूप में जानने का अवसर मिलेगा।

इस अवसर पर निवर्तमान अध्यक्ष सरोज आर बैद, उपाध्यक्ष सुमन पटवारी, कंचन छाजेड़, हेमलता सुराणा और सभा अध्यक्ष मनोज डागा, मंत्री विक्रम महर की उपस्थिति रही।

कनक कला कौशल प्रतियोगिता

चेन्नई।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेमम के तत्त्वावधान में 'कनक कला कौशल प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी के जीवन के किसी भी एक पहलू को दर्शाना था। प्रतियोगियों ने उत्साह से इस प्रतियोगिता में भाग लिया। कलाकृतियों की प्रविष्टियाँ प्रदर्शनी के तौर पर साहूकारपेट सभा भवन में रखी गई। अनेकों दर्शकों ने इन कलाकृतियों की सराहना की। इन कलाकृतियों का साध्वी अणिमाश्री जी एवं साध्वीवृंद द्वारा अवलोकन हुआ।

प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका अशोक खतंग एवं राजश्री डागा ने निभाई। निर्णायकों के निर्णय अनुसार चांदनी आच्छा-प्रथम एवं पद्माबाई बुबकिया दूसरे स्थान पर रही। कार्यक्रम की संयोजिका संगीता आच्छा ने सराहनीय श्रम किया। इस अवसर पर महिला मंडल पदाधिकारीगण एवं कार्यकर्ता बहनों की सराहनीय उपस्थिति रही।

आदर्श की जीवंतता है - अहिंसा

राजराजेश्वरी नगर।

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी के सान्निध्य में महिला मंडल के तत्त्वावधान में आदर्श की जीवंतता है - अहिंसा के विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम परमेष्ठि वंदना का संगान किया गया। मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण किया। साध्वी निर्भयप्रभा जी ने कहा कि कथनी-करनी की समानता और आपसी सामंजस्य हो तो हिंसा की संभावना कम रहेगी। साध्वी उदितप्रभा जी ने कहा कि अहिंसा को अपने आचार में उतारना होगा। साध्वी चेलनाश्री जी ने गीतिका की प्रस्तुति दी। शासनश्री मंजु रेखा जी एवं साध्वी कंचनप्रभा जी ने उद्‌बोधन दिया।

महिला मंडल की अध्यक्ष लता बाफना ने सभी का स्वागत किया। धन्यवाद ममता दुगड़ ने किया। कार्यशाला का संचालन सहमंत्री हेमलता सुराणा ने किया। निवर्तमान अध्यक्ष सरोज बैद एवं अच्छी संख्या में बहनें उपस्थित थीं।

ममं एवं तेयुप का शपथ ग्रहण समारोह

जसोल।

मुनि धर्मेश कुमार जी के सान्निध्य में तेयुप वर्ष-२०२१-२२ व तेमम का वर्ष २०२१-२३ का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित हुआ। तेयुप मंत्री दिनेश वडेरा व महिला मंडल मंत्री ममता मेहता ने बताया कि कार्यक्रम की शुरुआत मुनिश्री के नमस्कार महामंत्र से हुई। तेयुप सदस्यों द्वारा विजय गीत और महिलाओं द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया गया। निवर्तमान अध्यक्ष तरुण भंसाली ने नव निर्वाचित तेयुप अध्यक्ष जितेंद्र मांडोत व निवर्तमान अध्यक्ष मंजु देवी भंसाली ने नव निर्वाचित महिला मंडल अध्यक्ष सोहनीदेवी सालेचा को अध्यक्ष पद की शपथ दिलाई। इसके बाद अध्यक्ष जितेंद्र मांडोत एवं महिला मंडल अध्यक्ष ने अपने पदाधिकारी टीम को शपथ दिलाई। शपथ ग्रहण समारोह संस्कारक पवन छाजेड़, शांतिलाल भंसाली, डूंगरचंद सालेचा ने जैन संस्कार विधि द्वारा संपन्न करवाया।

मुनि धर्मेश कुमार जी ने सभी पदाधिकारियों को निडर रहकर कार्य करने को प्रोत्साहित किया। मुनि यशवंत कुमार जी ने नारी शक्ति पर प्रकाश डाला। तेरापंथ महासभा, जोधपुर संभाग प्रभारी गौतमचंद सालेचा ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। कार्यक्रम में डॉ० रमेश भंसाली, अभातेयुप सदस्य रोशन वागरेचा, बालोतरा तेयुप अध्यक्ष संदीप ओस्तवाल, मंत्री नवीन सालेचा ने भी संबोधित किया।

शपथ ग्रहण समारोह

राजलदेसर।

साध्वी डॉ० परमयशा जी से मंगलपाठ सुनकर तेरापंथ महिला मंडल की साधारण सभा का आयोजन हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत नवकार महामंत्र के द्वारा की गई। अध्यक्ष जबर देवी बैद ने स्वागत एवं धन्यवाद ज्ञापित किया। मंत्री सविता बच्छावत द्वारा प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया। प्रेम देवी विनायकिया का अध्यक्ष पद हेतु मनोनीत किया गया। पूर्व अध्यक्ष द्वारा माला एवं बैज टीका द्वारा नवनिर्वाचित अध्यक्ष का सम्मान किया गया।

नवनिर्वाचित अध्यक्ष प्रेम देवी विनायकिया ने अपनी कार्यकारिणी की घोषणा की। साध्वी डॉ० परमयशा जी के सान्निध्य में शपथ ग्रहण समारोह रखा गया। भूतपूर्व अध्यक्ष जबर देवी बैद ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष को शपथ दिलाई। नव निर्वाचित अध्यक्ष ने अपनी कार्यकारिणी को शपथ दिलाई।

योगक्षेम

अभातेयुप योगक्षेम योजना

सत्र 2019-21

✻ अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् मुम्बई साथीगण	(₹75,00,000)
✻ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र 2017-19	(₹31,00,000)
✻ श्री मदनलाल महेन्द्र तातेड़, मुम्बई	(₹13,00,000)
✻ श्री कन्हैयालाल विकासकुमार बोथरा, लाडनूं-इस्लामपुर	(₹11,00,000)
✻ श्री अशोक श्रेयांश बरमेचा, तारानगर-हैदराबाद	(₹11,00,000)
✻ श्री फतेहचंद-संतोष देवी, धीरज, पूजा, अर्हम सेठिया, लुधियाना	(₹5,51,000)
✻ श्री सागरमल दीपक श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	(₹5,00,000)
✻ श्री उमरावमल, प्रमोद, महेन्द्र, नरेन्द्र छाजेड़, रामगढ़ शेखावाटी-कोलकाता-जयपुर	(₹5,00,000)
✻ श्री माणकचंदजी सतीशजी ललितजी चोरड़िया (अमराईवाड़ी ओढ़व)	(₹5,00,000)

मासखमण एवं ९ की तपस्या का अभिनंदन

इचलकरंजी।

साध्वी प्रज्ञाश्री जी के चातुर्मास पूर्व उनके मुखारविंद से संतोषी देवी महावीर आंचलिया ने मासखमण का और पूजा रौनक घाड़ावत ने ६ की तपस्या का पचखान किया। साध्वीश्री जी के सान्निध्य में सभा की ओर से तप अनुमोदन का कार्यक्रम रखा गया। साध्वीश्री जी ने नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की। कन्या मंडल द्वारा मंगलाचरण किया। सभा अध्यक्ष महावीर ने अपने वक्तव्य में साध्वीश्री जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की और कहा कि उन्हीं की प्रेरणा से यह तपस्या सफल हो पाई।

महिला मंडल अध्यक्षा जयश्री जोगड़ ने तपस्वियों के सुखसाता पूछते हुए उनका अभिनंदन किया। तेयुप के मंत्री रोहित भंसाली ने संपूर्ण तेयुप की तरफ से मंगलकामना की। तपोनंदन के उत्सुक जयसिंहपुर अध्यक्ष विजयराज रुनवाल, तपस्वी बहन संतोषी की बहू पूजा, पौत्र अर्हम, पौत्री पलक ने तपस्वी बहन पूजा के ससुर विनोद घोड़ावत, तेयुप महिला मंडल, तपस्वी बहन पूजा इत्यादि ने अपनी भावना प्रकट की।

विकास सुराणा ने साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी का प्राप्त मासखमण का संदेश सुनाया। साध्वी विनयप्रभा जी एवं साध्वी प्रतीकप्रभा जी ने गीतिका द्वारा तपस्वी बहनों का अभिनंदन किया व सभी श्रावकों से चातुर्मास में अधिकाधिक तप करने का आह्वान किया।

साध्वी सरलप्रभा जी की प्रेरणा से दोनों ने तपस्या की। अग्रणी साध्वी प्रज्ञाश्री जी ने कहा कि गुरुदेव की कृपा से और उनकी ऊर्जा से यह संभव हो पाता है। साध्वीश्री जी ने दोनों को तपस्या का प्रत्याख्यान करवाया। तत्पश्चात दोनों तपस्वियों को अभिनंदन पत्र से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन सभा निवर्तमान अध्यक्ष सीमा डागा ने किया।

ज्ञानशाला संपर्क पखवाड़ा का आयोजन

हैदराबाद।

तेरापंथी महासभा ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के अंतर्गत नगर त्रय में संचालित २० ज्ञानशालाओं का सिकंदराबाद सभा के तत्त्वावधान में ज्ञानशाला संपर्क पखवाड़ा का उद्घाटन किया गया।

ज्ञानशाला संपर्क पखवाड़े के चार बैनरों का विमोचन नगर त्रय में विराजित चारों सिंघाड़ों के चातुर्मास स्थलों पर किया गया।

डीवी कॉलोनी।

शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी के सान्निध्य में सभा के पदाधिकारियों में सहमंत्री महेंद्र चोरड़िया, लक्ष्मीपत बैद व ज्ञानशाला क्षेत्रीय सह-संयोजक संगीता गोलछा आदि अनेक पदाधिकारी उपस्थित हुए एवं बैनर का विमोचन करवाया। शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी ने अपना उद्बोधन दिया।

ज्ञानबाग कॉलोनी।

साध्वी निर्वाणश्री जी के सान्निध्य में सभा के मंत्री सुशील संचेती, परामर्शक बाबूलाल सुराणा, चातुर्मास संयोजक लक्ष्मीपत डूंगरवाल, आसकरण सेठिया व अन्य कार्यकर्ताओं व सदस्यों ने उपस्थित होकर बैनर का विमोचन किया।

साध्वी निर्वाणश्री जी ने अपने उद्गार व्यक्त किए। साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी ने मंच का संचालन किया। साध्वी कुंदनयशा जी ने गीतिका का संगान किया। आंचलिक संयोजक अंजु बैद ने विचार व्यक्त किए।

बोइनपल्ली।

साध्वी मधुस्मिता जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला संपर्क पखवाड़ा बैनर का उद्घाटन सभा अध्यक्ष सुरेश सुराना, सतीश दुगड़ व सभा की टीम व ज्ञानशाला बोइनपल्ली, मुख्य प्रशिक्षक दीपमाला डागा, श्वेता घोषल, तारा बोहरा व टीम नरेडमेट ईकाई संयोजक जयंती पटावरी व प्रशिक्षिकाओं ने किया। साध्वीश्री जी ने वर्तमान में ज्ञानशाला की प्रासंगिकता बताई।

बोलाराम।

साध्वी काव्यलता जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला संपर्क पखवाड़े के बैनर का विमोचन सभा के रतन सुराणा व टीम ज्ञानशाला परीक्षा व्यवस्था सहयोगी सुमन सेठिया, बोलाराम इकाई संयोजक इंदू कातरेला, मधु कातरेला व टीम मारडपल्ली, इकाई संयोजक यशोदा कोठारी, सुमन चोरड़िया, सुमन बाबेल व टीम अमीरपेट से अंजु जैन व महिला मंडल अध्यक्ष अनिता गीडिया, तेयुप के नव मनोनीत अध्यक्ष प्रवीण श्यामसुखा ने किया।

साध्वी काव्यलता जी ने कहा कि जैन दर्शन में मोक्ष प्राप्ति का एक लक्ष्य है सम्यक् दर्शन। साध्वी जयोतियशा जी ने कार्यक्रम का संचालन किया। साध्वी सुरभिप्रभा जी ने मंत्र दीक्षा गीतिका का संगान किया। परीक्षा व्यवस्थापक सहयोगी सुमन सेठिया ने ज्ञानशाला संपर्क पखवाड़ा का आगाज किया।

ज्ञानशाला संपर्क पखवाड़ा संयोजक डिम्पल बैद व संगीता गोलछा, सरिता नखत, मीनाक्षी सुराणा, सभा से ज्ञानशाला संयोजक सुनील बोहरा व लख्मीपत बैद का सहयोग प्राप्त हुआ।

जैनागमों के महान मर्मज्ञ थे - आचार्य भिक्षु

राजाराजेश्वरी नगर।

तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी के सान्निध्य में आचार्यश्री भिक्षु का २९६वाँ जन्म दिवस एवं २६४वाँ बोधि दिवस आयोजित किया गया। साध्वीश्री द्वारा महामंत्रोच्चार के पश्चात तेमम द्वारा मंगलाचरण में आचार्य भिक्षु के श्रीचरणों में श्रद्धागीत समर्पित किया गया। शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी ने कहा कि जैनागमों के महान मर्मज्ञ एवं व्याख्याता थे आचार्य भिक्षु, उनकी सूक्ष्मग्राही मनीषा ने प्रवाहपाती बनना स्वीकार नहीं किया। आचार्य भिक्षु ने कहा आत्म साधना के पथ में संयम एवं अहिंसा ही स्वीकार्य है।

शासनश्री साध्वी मंजुरेखा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु दिव्य संकेतों के साथ जन्मे। जब वे गर्भ में थे तब माँ दीपा ने सिंह का स्वप्न देखा था, वह चरितार्थ हुआ।

साध्वी उदितप्रभा जी, साध्वी निर्भयप्रभा जी, साध्वी चेलनाश्री जी ने आचार्य भिक्षु के जीवन पर विचार रखे। तेरापंथ सभा अध्यक्ष मनोज डागा, तेयुप अध्यक्ष सुशील भंसाली, तेमम अध्यक्षा लता बाफना, सभा के संस्थापक अध्यक्ष कमल दुगड़, तेयुप अध्यक्ष सतीश पोरवाड़ आदि ने अपने विचार व्यक्त किए।

उपाध्यक्ष राजेश देरसारिया, अशोक श्रीश्रीमाल, कमलेश गन्ना, पंकज, रंजीत आदि उपस्थित थे। तेमम से सीमा श्रीमाल, सुनीता कोठारी भी उपस्थित थी। तेयुप अध्यक्ष सतीश पोरवाड़ ने अपनी टीम के साथ नवीन संशोधित सचित्र श्रावक प्रतिक्रमण पुस्तक का लोकार्पण शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी के सान्निध्य में किया। आभार ज्ञापन तेरापंथ सभा मंत्री विक्रम मेहर ने किया।

भिक्षु भक्ति संध्या का आयोजन

ज्ञानबाग कॉलोनी, हैदराबाद।

साध्वी निर्वाणश्री जी के सान्निध्य में भिक्षु भक्ति संध्या हुई। ज्ञानबाग कॉलोनी के उम्मेद भवन में विशाल परिसर में भक्ति का नया नजारा खिला। भक्ति संध्या का शुभारंभ अर्हत् वंदना से हुआ। साध्वी निर्वाणश्री जी ने सहवर्ती साध्वीवृंद के साथ चतुर्थ आचार्य द्वारा रचित गीत सह-संगान से स्वर लहरियों की गुंजन आगे बढ़ी। नमस्कार मंत्र के गीत को जिसे प्रमोद दुगड़ की अगवानी में भाई-बहनों ने प्रस्तुति दी। साध्वी लावण्यप्रभा जी, साध्वी कुंदनयशा जी, साध्वी मधुरप्रभा जी ने सुमधुर गीतों से सबका मन मोह लिया।

गायक इंद्र सेठिया ने गीत की प्रस्तुति दी। साध्वी निर्वाणश्री जी ने भिक्षु की भक्ति संदर्भ में विचार अभिव्यक्त किए।

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि - अमूल्य निधि

पाणिग्रहण संस्कार

साउथ हावड़ा।

मोमासर निवासी, साउथ हावड़ा प्रवासी धर्मेश संचेती की सुपुत्री प्रियंका का शुभ विवाह भीनासर निवासी पारस जैन बच्छावत के सुपुत्र ऋषभ के साथ जैन संस्कार विधि से संपन्न हुआ। संस्कारकद्वय राकेश संचेती एवं पवन कुमार बैंगानी ने संस्कार संपन्न करवाया।

संस्कारकों ने वर-वधू को धारणा अनुसार त्याग-प्रत्याख्यान करने की प्रेरणा दी। परिषद की ओर से आभार ज्ञापन हितेंद्र बैद ने किया। संचेती एवं बच्छावत परिवार ने तेयुप एवं संस्कारकों का आभार ज्ञापन किया।

नूतन गृह प्रवेश

गंगाशहर।

गंगाशहर निवासी चंदनमल दुगड़ के नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि द्वारा अभातेयुप संस्कारक पवन छाजेड़ ने विधिपूर्वक संपन्न करवाया। तेयुप के सहमंत्री विनीत बोथरा सहयोगी के रूप में रहे।

इस कार्यक्रम को जैन विधि से संपादित कराने में जैन संस्कारक विधि के राष्ट्रीय सहप्रभारी राकेश जैन और निर्मल सुराणा का विशेष सहयोग रहा।

नूतन गृह प्रवेश

सूरत।

पदराड़ा निवासी, सूरत प्रवासी मनीष-प्रीति बाफना के नूतन गृह प्रवेश का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से विजयकांत खटेड़, सुशील गुलगुलिया व हिम्मत बम्म ने संपूर्ण विधि व मंत्रोच्चारण से संपन्न करवाया। संस्कारकों की प्रेरणा से सभी ने त्याग-प्रत्याख्यान किया। मनीष व परिजनों ने सभी का आभार ज्ञापन किया। तेयुप, सूरत की ओर से मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

सूरत।

गंगाशहर निवासी, सूरत प्रवासी सोहनलाल हीरावत के सुपुत्र सुजित व उदित के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक प्रकाश डाकलिया व सुशील गुलगुलिया ने संपन्न करवाया। संस्कारकों की प्रेरणा से सभी ने त्याग-प्रत्याख्यान किया। सोहनलाल व उनके परिवार ने संस्कारकों व सभी जनों का आभार ज्ञापन किया। तेयुप, सूरत द्वारा मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

पाणिग्रहण संस्कार

सूरत।

रायकोट-सेडम (कर्नाटक) निवासी कीम प्रवासी आनंद भिषेटी की सुपुत्री भवानी का शुभ पाणिग्रहण संस्कार भीटा (राज०) निवासी कामरेज प्रवासी धनराज ओस्तवाल के सुपुत्र सोनू ओस्तवाल के साथ जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड़ व मनीष मालू व कामरेज के जनक पोकरणा ने मंगल मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया। संस्कारों की प्रेरणा से सभी ने त्याग-प्रत्याख्यान किए।

तेयुप सूरत द्वारा मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

नूतन गृह प्रवेश

जयपुर।

माया-नवनीत डागा (सुपुत्र स्व० उमराव देवी-बच्छराज डागा) का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से श्री संस्कारक श्रेयांस बैंगानी ने पूरे विधि-विधान से संपन्न करवाया।

कार्यक्रम में तेयुप निवर्तमान अध्यक्ष श्रेयांस बैंगानी, मंत्री सुरेंद्र नाहटा, कार्यसमिति सदस्य विनीत सुराना ने परिषद परिवार की ओर से मंगलभावना पत्रक भेंट कर शुभकामनाएँ प्रेषित की।

नामकरण संस्कार

राजाराजेश्वरी नगर।

राजगढ़ निवासी, बैंगलोर प्रवासी रीना-सुनील सुराणा की सुपौत्री एवं आकांक्षा-प्रवेश सुराणा की सुपुत्री का नामकरण संस्कार अभातेयुप के प्रबुद्ध विचारक संस्कारक राकेश दुधोड़िया एवं सह-संस्कारक दिनेश मरोठी द्वारा जैन संस्कार विधि से संपन्न करवाया।

कार्यक्रम में तेयुप अध्यक्ष सुशील भंसाली, जैन संस्कार विधि प्रभारी कौशलमल लोढ़ा उपस्थित थे। सुनील सुराणा ने संस्कारकों एवं परिषद के प्रति आभार ज्ञापित किया।

✦ जीवन में सदुपदेश का थोड़ा-सा अंश भी उतरना शुरू हो गया तो जीवन में सत् परिवर्तन आ सकता है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

आत्मा के आसपास

❑ आचार्य तुलसी ❑

प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा

अस्तित्व की जिज्ञासा

लक्ष्मण श्रीराम की बात सुनकर मौन रहे, पर उसी पम्पा सरोवर में रहने वाली मछली तड़प उठी। वह साहस जुटाकर बोली–

बकः किं वर्ण्यते राम! येनाहं निष्कुली कृता।
सहचारी विजानीयात् चरित्रं सहचारिणाम्।।

राम! आप बगुले की धार्मिकता का वर्णन करते हैं! जिस बगुले ने मेरे समूचे कुल को समाप्त कर दिया, वह धार्मिक हो सकता है? राम! आप नहीं जानते इसकी कुटिलता को, क्योंकि हरदम साथ में रहने वाला व्यक्ति ही अपने साथी के चरित्र को यथार्थ रूप में जान सकता है।

इस प्रसंग के आधार पर यह जाना जा सकता है कि मूल्य केवल एकाग्रता का नहीं किंतु उस एकाग्रता की विषय-वस्तु का है। जो एकाग्रता चैतन्य या अपने अस्तित्व के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करती है, वही एकाग्रता साधना की दृष्टि से बहुमूल्य है और वही साधना का आदि बिंदु है। जब तक अपने अस्तित्व के बारे में जिज्ञासा नहीं जागती, व्यक्ति अपने आपको पहचानने के लिए उत्सुक नहीं होता। 'मैं कौन हूँ?' इस प्रश्न का उत्तर पाने के लिए अकुलाहट नहीं होती, तब तक ध्यान की वास्तविक भूमिका उपलब्ध नहीं हो सकती। अपने अस्तित्व के प्रति गहरी उत्सुकता जगाने के बाद साधना-पथ स्वयं मिल जाता है। क्योंकि गहरी उत्सुकता और पथ में बहुत दूरी नहीं होती। उत्सुकता मन में बेचैनी पैदा करती है। बेचैनी के चरम शिखर पर पहुँचने पर पथ स्वयं मिल जाता है।

एक संन्यासी के पास एक जिज्ञासु युवक आया और बोला–'गुरुदेव! मैं अध्यात्म का जिज्ञासु हूँ। आप मुझे साधना का पथ दिखाएँ।' संन्यासी ने कहा–'शिष्य! यह बहुत अच्छी बात है। तुम्हारा अध्ययन पूरा हो गया है, अब तुम साधना के क्षेत्र में गति करना चाहते हो, यह तुम्हारे शुभ भविष्य का प्रतीक है। मैं तुम्हें साधना का गुर बताऊँगा पर अभी नहीं। आज वापस जाओ, एक सप्ताह बाद आना।' युवक लौट गया और ठीक एक सप्ताह बाद पुनः आश्रम में पहुँचकर बोला–'बाबा! सप्ताह पूरा हो गया है, अब तो पथ दिखाओ।' संन्यासी ने उसको दो सप्ताह की प्रतीक्षा करने का निर्देश देकर लौटा दिया। शिष्य विनीत था। गुरु की बात मानकर उसने दो सप्ताह की प्रतीक्षा की। समय पूरा होते ही वह संन्यासी के पास पहुँचा। संन्यासी ने फिर तीन सप्ताह के लिए लौटा दिया। इस प्रकार कई महीने निकल गए। एक दिन वह अधीर होकर बोला–'गुरुदेव! क्या बात है? आप मुझे टाल क्यों रहे हैं? आप मुझे साधना के योग्य नहीं समझते हैं?' संन्यासी उसकी अधीरता देखकर बोला–'अच्छा चलो, आज मैं तुम्हें साधना का पथ दिखलाता हूँ।'

संन्यासी उस युवक को साथ लेकर चला और शहर पार कर एक नदी के तट पर पहुँच गया। वहाँ कुछ क्षण विश्राम कर वह बोला–'वत्स! शीतल और स्वच्छ जल बह रहा है, हाथ-मुँह धो लो।' शिष्य ज्यों ही नीचे उतरा, संन्यासी ने उसका सिर पकड़कर उसे नीचे बिठा दिया। वह तत्काल ऊपर उठने लगा, पर संन्यासी की पकड़ मजबूत थी। उसने उसको उठने ही नहीं दिया। वह भीतर-ही-भीतर छटपटाने लगा। अब वह श्वास ले तो नाक और मुँह में पानी भर जाता है और श्वास रोक ले तो दम घुटने लगता है। एक क्षण भी पानी में रहना उसके वश की बात नहीं थी। उसकी अकुलाहट और छटपटाहट देख संन्यासी ने उसको बाहर निकालकर कहा–'शिष्य! ऐसी क्या जल्दी थी तुम्हें? थोड़ी देर और पानी में रह जाते तो क्या होता?' युवक अपने भीतर की बेचैनी प्रकट करते हुए बोला–'गुरुदेव! होना क्या था? प्राण निकल जाते। एक क्षण का विलंब भी मेरे लिए सह्य नहीं था। क्या आप मेरे प्राण लेने की सोच रहे थे?'

संन्यासी मुस्कराता हुआ बोला–'वत्स! मैं तुम्हारे प्राण लेना नहीं चाहता था, तुम्हें साधना का पथ दिखलाना चाहता था।'–'कैसे?' शिष्य ने पूछा। उसकी जिज्ञासा को समाहित करते हुए संन्यासी बोला–'जब तुम पानी में डूबने लगे तो एक पल भी चैन से नहीं रह सके और साधना के लिए तुमको कोई बेचैनी नहीं हुई। साधना के प्रति भी आज जैसी बेचैनी जागेगी, तब साधना-पथ उपलब्ध होगा।'

साधना के लिए गहरी तड़प की अपेक्षा है। गहरी तड़प पथ की उपलब्धि सहजता से करा देती है। पथ उपलब्ध होने के बाद यम, नियम आदि के अनुसार जीवन को ढालना जरूरी है। इस बात को इस प्रकार भी कहा जा सकता है कि साधना का प्रथम बिंदु प्राप्त होने के बाद यम, नियम आदि सहज ही जीवन में उतरने लगते हैं। साधना की दृष्टि से जीवन में व्रतों का विशेष मूल्य है। व्रतों के अभाव में अग्रिम विकास की बाधाएँ निरस्त नहीं होतीं। जिस प्रकार बीज बोने से पहले ऊबड़-खाबड़ भूमि को सम बनाया जाता है, उसी प्रकार ध्यान का बीज वपन करने के लिए व्यवहार की विषम भूमि को महाव्रत और अणुव्रत की आराधना के द्वारा सम किया जाता है। भूमि का समतलीकरण होने के बाद ध्यान के बीजों की बुआई बहुत सरल हो जाती है। उक्त तथ्यों के आधार पर तीन बातें पूर्णतः स्पष्ट हो जाती हैं–पहली, अस्तित्व की जिज्ञासा होनी चाहिए। दूसरी, साधना के लिए गहरी तड़प और उनके साथ होनी चाहिए व्रतों की आराधना। साधना का विकास करने के लिए इस त्रिपुटी का योग बहुत आवश्यक है।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

❑ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ❑

(११)

आज का यह प्रात है अवदात कितना।
गगन की पुलकन धरा पर उतर आई।।

जानते सब तुम जगत में हो अनूठे
नहीं कोई इस तुला में आ सका है
बाँटते मधुकोष अक्षय और अनुपम
थाह बोलो कौन उसकी पा सका है
विश्व के इतिहास में अंकित हुए तुम
त्रस्त मानव के तुम्हीं हो एक त्रायी।।

घाटियाँ वीरान-सी जो लग रही थीं
आ गए सहसा वहाँ तुम ले बहारें
फूल-सी मुस्कान तुमने ही बिखेरी
जहाँ काँटों से भरे थे पंथ सारे
जिंदगी तम से घिरी जब आदमी की
चेतना आलोक की तुमने जगाई।।

दो नया संदेश तुम हमको सृजन का
स्वप्न को कर सत्य हम युग को दिखाएँ
खिल रहा सारा गुलिस्ताँ देख तुमको
प्राण का पंछी अचानक गुनगुनाए
शांति का निर्झर तुम्हारे पास बहता
बूँद बनकर मैं स्वयं उसमें समाई।।

एक लंगर और तुमने आज डाली
अब नहीं तूफान भी कुछ कर सकेगा
नाव जीवन की सहज बढ़ती रहेगी
नहीं मन-मांझी कभी भी डर सकेगा
तैर सकते हो समंदर तुम भुजा से
मचलती लहरें तुम्हें देती बधाई।।

(१२)

जन-जन के मानस-मंदिर में थिरक रहा अभिनव उल्लास।
सफर सुहाना अर्द्धसदी का दिग् दिगन्त में सुयश-सुवास।।

जन-हित में अर्पित है जीवन दिखलाई अणुव्रत की राह
अलख जगाई नैतिकता की कल्पवृक्ष की ठंडी छाँह
हर इन्सां इन्सान बने यह पलती है पलकों में चाह
स्नेहिल नजरों के जादू से दूर भगाते दिल की दाह
बाँटो इमरत अंजुरियाँ भर बुझ जाए इस युग की प्यास।।

समता के उत्तुंग शिखर पर चरण तुम्हारे हैं गतिशील
ज्योतिर्मय कर देती सबको उजली ज्ञानमयी कंदील
प्रेरक सन्निधि यह मंगलमय है निदाघ में शीतल झील
सम्मोहन अद्भुत बिखेरती जीवन की अलबेली रील
चिर अनंत रमणीय! तुम्हारा उपशम-मंडित हर उच्छ्वास।।

दिल है इक दरिया करुणा का नहीं कहीं है उसका छोर
देख तुम्हारा धैर्य विलक्षण उठती मन में नई हिलोर
रजत-रश्मियों के रथ पर आ अर्चा करता रवि हर भोर
देख तुम्हारी छवि कुदरत का कण-कण पुलकित कांत किशोर
भक्ति-शक्ति की इस धरती पर रचा देव! तुमने इतिहास।।

(क्रमशः)

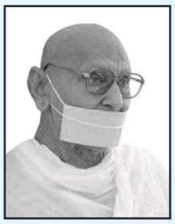

संबोधि

❑ आचार्य महाप्रज्ञ ❑

क्रिया-अक्रियावाद

(१८) **यथा त्रयो हि वणिजो, मूलमादाय निर्गताः।**
एकोऽत्र लभते लाभं, एको मूलेन आगतः।।

(१९) **हारयित्वा मूलमेकः, आगतस्तत्र वाणिजः।**
उपमा व्यवहारेऽसौ, एवं धर्मेऽपि बुद्ध्यताम्।। *(युग्मम्)*

जिस प्रकार तीन वणिक् मूल पूँजी लेकर व्यापार के लिए चले। एक ने लाभ कमाया, एक मूल पूँजी लेकर लौट आया और एक ने सब कुछ खो डाला। यह व्यापार विषयक उदाहण है। इसी प्रकार धर्म के विषय में भी जानना चाहिए।

(२०) **मनुष्यत्वं भवेन्मूलं, लाभः स्वर्गोऽमृतं तथा।**
मूलच्छेदेन जीवाः स्युः, तिर्यञ्चो नारकास्तथा।।

मनुष्य-जन्म मूल पूँजी है। स्वर्ग या मोक्ष की प्राप्ति लाभ है। मूल पूँजी को खो डालने से जीव नरक या तिर्यंच गति को प्राप्त होते हैं।

(२१) **विमात्राभिश्च शिक्षाभिः, ये नरा गृहसुव्रताः।**
आयान्ति मानुषीं योनिं, कर्मसत्या हि प्राणिनः।।

जो लोग विविध प्रकार की शिक्षाओं से गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी सुव्रती हैं, सदाचार का पालन करते हैं, वे मनुष्य योनि को प्राप्त होते हैं क्योंकि प्राणी कर्मसत्य होते हैं—जैसे कर्म करते हैं वैसे ही फल को प्राप्त होते हैं।

(२२) **येषां तु विपुला शिक्षा, ते च मूलमतिसृताः।**
सकर्माणो दिवं यान्ति, सिद्धिं यान्त्यरजोमलाः।।

जिनके पास विपुल ज्ञानात्मक और क्रियात्मक शिक्षा है, वे मूल पूँजी की वृद्धि करते हैं। वे कर्मयुक्त हों तो स्वर्ग को प्राप्त होते हैं और जब उनके रज और मल का—बंधन और बंधन के हेतु का—नाश हो जाता है तब वे मुक्त हो जाते हैं।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ❑

(२) दर्शन (सम्यक्त्व) मार्ग

प्रश्न-१२ : पाँचों सम्यक्त्व की अल्पाबहुत्व का क्या क्रम है?

उत्तर : सबसे कम उपशम सम्यक्त्वी है। उससे संख्यात गुण अधिक वेदक सम्यक्त्वी, उससे असंख्य गुण अधिक सास्वादन सम्यक्त्वी, उससे असंख्य गुण अधिक क्षयोपशम सम्यक्त्वी हैं, उससे अनंत गुण अधिक क्षायक सम्यक्त्वी हैं सिद्धों की अपेक्षा से।

प्रश्न-१३ : सम्यक्त्व कौन-कौन से गुणस्थान में हैं?

उत्तर :

औपशमिक	–	चौथा से ग्यारहवाँ गुणस्थान
क्षायिक	–	चौथा से चौदहवाँ गुणस्थान तथा सिद्ध
क्षायोपशमिक	–	चौथा से सातवाँ गुणस्थान
सास्वादन	–	दूसरा गुणस्थान
वेदक	–	चौथा से सातवाँ गुणस्थान

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

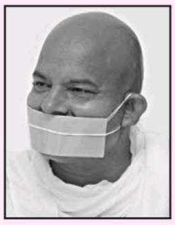

❑ आचार्य महाश्रमण ❑

आचार्य भद्रबाहु (प्रथम)

आर्य स्थूलभद्र ने पुनः नम्र निवेदन किया—'प्रभो! पूर्वज्ञान का विच्छेद होने वाला है, परंतु मैं सोचता हूँ कि श्रुत-विच्छिन्नता का निमित्त मैं न बनूँ अतः पुनः प्रणति पूर्वक आपसे वाचना प्रदानार्थ आग्रहभरी नम्र विनती कर रहा हूँ।'

आचार्य स्थूलभद्र को वाचना प्रदान की स्वीकृति करने हेतु सकल संघ ने बार-बार आचार्य भद्रबाहु के सामने विनती की।

सबकी भावना सुनने के बाद समाधान के स्वर में दूरदर्शी आचार्य भद्रबाहु बोले—'गुणमंडित, अखंडित आचारनिधिसंपन्न मुनिजनो! मैं आर्य स्थूलभद्र की भूल के कारण ही वाचना देना स्थगित नहीं कर रहा हूँ। वाचना न देने का कारण और भी है। वह यह है—मगध की रूपसी कोशा गणिका के बाहुपाश को तोड़ देने वाला एवं अमात्य-पद के आमंत्रण को ठुकरा देने वाला आर्य स्थूलभद्र श्रमण-समुदाय में अद्वितीय है। वह योग्य है। इसकी शीघ्रग्रही प्रतिभा के समान अभी कोई दूसरी प्रतिभा नहीं है। इसके प्रमाद को देखकर मुझे अनुभूत हुआ कि समुद्र भी मर्यादा का अतिक्रमण करने लगा है। उच्च कुलोत्पन्न, पुरुषों में अनन्य, श्रमण-समाज का भूषण, धीर, गंभीर, दृढ़ मनोबली, परम विरक्त आर्य स्थूलभद्र जैसे व्यक्ति को भी ज्ञान-मद आक्रांत करने में सफल हो गया है। आगे इससे भी मंदसत्त्व साधक होंगे। अतः पात्रता के अभाव में ज्ञानदान की आशातना है। भविष्य में अवशिष्ट वाचना प्रदान करने के किसी प्रकार के लाभ की संभावना नहीं है। साथ ही वाचना को स्थगित करने से आर्य स्थूलभद्र को अपने प्रमाद का दंड मिलेगा और भविष्य में श्रमणों के लिए उचित मार्गदर्शन होगा।'

आर्य स्थूलभद्र ने पुनः अपनी भावना श्रुतधर आचार्य भद्रबाहु के सामने प्रस्तुत करते हुए कहा—'मैं पररूप का निर्माण कभी नहीं करूँगा। आप कृपा करके अवशिष्ट चार पूर्वों का ज्ञान देकर मेरी इच्छा पूर्ण करें।'

आर्य स्थूलभद्र के अत्यंत आग्रह पर आचार्य भद्रबाहु ने उन्हें चार पूर्वों का ज्ञान अपवाद के साथ प्रदान किया। आर्य स्थूलभद्र को आचार्य भद्रबाहु से दश पूर्वों का ज्ञान अर्थसहित एवं अवशिष्ट चार पूर्वों का ज्ञान शब्दशः प्राप्त हुआ।

आचार्य भद्रबाहु पैंतालीस वर्ष तक गृहस्थ जीवन में रहे। उनका सोलह वर्ष तक सामान्य अवस्था में साधु-पर्याय पालन एवं चौदह वर्ष तक युगप्रधान पद वहन का काल था। उनकी सर्वायु छिहत्तर वर्ष की थी। बारह वर्ष तक उन्होंने महाप्राण ध्यान की साधना की थी।

जिनशासन को सफल नेतृत्व एवं श्रुतसंपदा का अमूल्य अनुदान देकर श्रुतकेवली आचार्य भद्रबाहु वीर निर्वाण १७० (वि०पू० ३००) में स्वर्ग को प्राप्त हुए।

उन्हीं के साथ अर्थ वाचना की दृष्टि से श्रुतकेवली का विच्छेद हो गया।

आचार्य स्थूलभद्र

कामविजेता आचार्य स्थूलभद्र को श्वेतांबर परंपरा में अत्यंत गौरवमय स्थान प्राप्त हुआ है। वे तीर्थंकर महावीर के आठवें पट्टधर थे। श्रुतधर परंपरा के वे अंतिम श्रुतकेवली थे। दुष्काल के आघात से टूटती श्रुत-शृंखला को सुरक्षित रखने का एकमात्र श्रेय महास्थविर योगी आचार्य स्थूलभद्र की सुतीक्ष्ण प्रतिभा को है। आचार्य स्थूलभद्र के लिए श्वेतांबर परंपरा का प्रसिद्ध श्लोक है—

मंगलं भगवान वीरो, मंगलं गौतमप्रभुः।
मंगलं स्थूलभद्राद्या, जैनधर्मोऽस्तु मंगलम्।।

मंगलकारक तीर्थंकरदेव वीर प्रभु और गणधर इंद्रभूति गौतम के बाद आचार्य स्थूलभद्र के नाम का स्मरण उनके विशिष्ट व्यक्तित्व का सूचक है।

(क्रमशः)

✦ मानव जीवन दुर्लभ होता है। जीवन जीना सामान्य बात है, विशेषतासंपन्न जीवन जीना विशेष बात है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

साध्वी गुणश्री जी के प्रति काव्यांजलियाँ

अर्हम्

● शासनश्री साध्वी मदनश्री ●

सौ-सौ नमन करां चरणां में
शासनश्री गुणश्रीजी
तेरापथ में यशलियो थे सांतरो।।

भिक्षु शासन अलबेलो
महाश्रमण गणमाली
संयम पायो गुरु तुलसी रै हाथ स्यूँ।।

चौरड़िया कुल जन्म लियो
चंदेरी नै चमकायो
कुल में थे नाम कमाईयों आपरो।।

क्षेत्र पुराणो बीदाणो
सगला रै मन भावणो
थिर वासी मोहनाजी रे साथ में।।

संघ निष्ठा सहनशीलता
समता देखी आंख्या स्यूँ
किया बतावां दिल खोलकर।।

आठ वर्ष तक
मदनश्री रही आपके साथ में
वत्सलता पाई हरदम आपकी।।

गुणारां भंडार म्हारां, आप छोड़कर चल्या गया
किसको सुनाऊँ दिल की बातड़ी।।

लय : राग-तेजा रे

अर्हम्

● साध्वी योगक्षेमप्रभा ●
● संगान : साध्वी निर्वाणश्रीजी आदि ●

सतिवर गुणश्री जी गुणखान
इत्ती कोई जल्दी मचगी करयो स्वर्ग प्रस्थान।।

सतिवर मोहनाश्री सहयोगी, तन, मन स्यूँ सेवा संजोगी।
जम्यो जमायो बण्यो ठिकाणो, बीदाणै गलतान---

हँसता खिलता निज गुण रमता, ध्यान, जाप, स्वाध्याय सततता।
कृपा कराई, काम कर्‌यो थे अधरां पर ही तान----

मदन, वसु, गुणी रो थिर---ठाणो, प्रथम पड़ोसी संग सुहाणो।
आतां जातां थे बतलाता, मुख पर मधु मुस्कान----

सोच्यो गुरु री भक्ति करस्यो, कार्तिक ने थे लाड लडास्यो।
सावन री बारस दिन मध्ये तज्या देह स्यूँ प्राण----

लय : कितना बदल गया इंसान

अर्हम्

● साध्वी जिनप्रभा ●

साध्वी गुणश्री जी गुणवान-२
इकहत्तर बरसां री है संयम पर्याय महान।।

शहर लाडनूं जनम्या चौरड़िया कुल में अवतरिया।
माणकचंदजी पिता और मोहन माता गुणदरिया।।

संस्कारी परिवार मिल्यो जीवन बगिया सरसाई।
संयम लेवण हृदय उम्हायो जागी जबर पुण्याई।।

हिसार नगर हरियाणै बाजी दीक्षा री शहनाई।
गुरु तुलसी करकमलां संयम रत्न मिल्यो वरदाई।।

न्यातीला सतियाँ रो जोग मिल्यो गुरुवर किरपा स्यूं।
संयम जीवन उजलो जीयो सात्त्विक संस्कारां स्यूं।।

हस्तकला में निपुण और ही लिपिकला भी सुंदर।
लिख्या चार सौ पानां लगभग स्वच्छ सुघड़ हा अक्षर।।

गती काम री ही धीमी पर रखता हा चतराई।
पात्र रंगाई जाल बनाणो करता भले सिलाई।।

सहज सरल अर सौम्य वदन हो हँसमुख रहतो चेहरो।
कोउ घणो हो समय-समय पर नया काम सीखण रो।।

सेवा भाव विलक्षण हो देखण वाला ही जाणै
गुरु तुलसी उल्लेख कराता जब तल आणै टाणै।।

ओज भरी ही वाणी मनडो हलको हो तन भारी।
जन भी अवसर मिलतो रखता भाषण री तैयारी।।

साल छियाली स्यूं स्थिरवासों बीदासर सुखकारी।
महाश्रमण गुरुचरण शरण में नैया पार उतारी।।

लय : म्हानै चाकर राखोजी

अर्हम्

● साध्वी नम्रताश्री ●

शासनश्री साध्वी गुणश्री जी, तेरी महिमा अनुपम क्या कहना।
इकहत्तर वर्षों का संयम, तेरी साधना का क्या कहना।।

तेरी सहज सरलता कोमलता, हँसता चेहरा मनहर लगता।
कष्टों में भी कितनी समता, तेरी आत्मशक्ति का क्या कहना।।

सेवाभावी मृदु व्यवहारी, गणपति स्यूँ गहरी इकतारी।
जप ज्ञान ध्यान शुभ दिनचर्या, संकल्पशक्ति का क्या कहना।।

अद्‌भुत आकर्षण था गहरा, तेरी सेवा में मन हरा भरा।
संस्कार दिए तुमने गहरे, स्नेहिल ममता का क्या कहना।।

दीक्षा पाई तुलसी कर से, शासनश्री गोरव गुरुवर से।
संयम जीवन उजला तेरा, हर जन-जन व मन का है कहना।।

लय : दुनिया में देव अनेकों हैं---

अर्हम्

● साध्वी खुशीप्रभा ●

संयम साधना स्यूँ जीवन महकायो।
चमचम चमकै भाल च्यानणो फैलायो।।

बा वत्सलता समता ममता,
अनुपम लागो सबनै गमता,
कबाम पड्‌यो जद् खरो समर्पण करके दिखलायो।।

ऋजुता मृदुता थांरी मनभाई,
कष्टां में कदी ना कुम्हलाई,
महानिर्जरा पथ चला, कुल चमकायो।।

ज्योतिर्मय जीवन थे जीयो,
हरपल उपशम रस थे पीयो,
ज्ञान, ध्यान, आगम वाणी में ही जीवन वार्‌यो।।

म्हांरे जीवन में साहस भरज्यो,
स्वर्गां में भी मत भूलिज्यो,
भैक्षव शासन, गुरु महाश्रमण रो हैं सायो।।

लय : स्वामी भीखणजी रो नाम

अर्हम्

● साध्वी कार्तिकयशा ●

सुनो लागे ओ केंद्र समाधि देखो थांरे बिन
गुणवान सती गुणश्रीजी याद करां म्हें रात-दिन
गुरु दृष्टि ने आराध्या रात-दिन।

ओले-दोले घूमताँ सेवा में रमता
मुखड़ो हँसतो शोभतो सबरां मणगमता
स्नेहिल ममता म्हें पाई देखो थास्यूं रात-दिन।।

जाप ध्यान समरण कर्‌यो, नित्य नियम रे साथ
लाड़ लड़ाता ही घणा, जद् भी जाता पास
सहज सरल और मृदु व्यवहार निरखियो रात-दिन।।

ठाकर हा ठीकाणे रा, नजरां थांरी तेज
कुण कठै कांई करे, जाणण रो हो क्रेज
सजग रह्‌या अंतर बाहर में देखो रात-दिन।।

पैंतीस वर्षों तक बणी, बीदाणे री शान
भायां बायां रो सदा, राख्यो घणो ही मान
गहरो अपनापन सगलां पायो थास्यूँ रात-दिन।।

गुरु-दर्शन कर धन्य बनूँ, मन री गहरी आस
प्रमुखाश्रीजी स्यूँ मिलूँ, कर ल्यूँ बातां खास
मन री मन में क्यूँ राख पधार्‌या देखो मध्य-दिन।।

लय : उमराव थारी---

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

फिट युवा-हिट युवा

रोहिणी, दिल्ली।

फिट युवा-हिट युवा के अंतर्गत योग कार्यशाला का आयोजन तेयुप, दिल्ली ने तेरापंथ भवन, रोहिणी में आयोजित किया। कार्यक्रम की शुरुआत उपासक विमल गुणेचा द्वारा नमस्कार महामंत्र के सामुहिक उच्चारण से हुई। सहभागी सभी युवा साथियों एवं विमल गुणेचा का स्वागत अध्यक्ष विकास बोथरा ने किया।

कार्यक्रम को उपासक, संस्कारक एवं जीवन-विज्ञान प्रशिक्षक विमल गुणेचा द्वारा अलग-अलग योग मुद्राओं के रूप में करवाया गया। विमल गुणेचा ने योग मुद्राओं के साथ-साथ मैडिटेशन कैसे करें, ध्यान कैसे लगाएँ पर भी सबका ध्यान केंद्रित करवाते हुए युवाओं को जागरूक किया। कार्यक्रम में लगभग ६० की संख्या में युवा उपस्थित थे।

फिट युवा-हिट युवा कार्यक्रम में तेयुप के अध्यक्ष विकास बोथरा, रोहिणी सभा के अध्यक्ष मदनलाल जैन, तेयुप, दिल्ली के उपाध्यक्ष संजीव जैन, मंत्री सौरभ आंचलिया, सहमंत्री-प्रथम अशोक सिंघी व अन्य गणमान्यजन उपस्थित रहे।

शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि प्रेक्षाध्यान का मतलब है खुद को देखना, अपने आभामंडल को देखना। विकास बोथरा ने कहा कि जैसे आहार हमारे शरीर के लिए हर दिन आवश्यक है, उसी प्रकार योगा भी शरीर के लिए हर दिन जरूरी है।

कार्यक्रम को सुचारु रूप से चलाने का दायितव हिम्मत राखेचा एवं अमन जैन ने संभाला। हिम्मत राखेचा ने साध्वीश्री जी के प्रति कृतज्ञता, विशेष आभार विमल गुणेचा के प्रति एवं सभी महानुभावों का आभार प्रकट किया। मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम समापन हुआ।

शपथ ग्रहण समारोह

रायपुर।

तेयुप की नव कार्यपरिषद ने सत्र २०२१-२२ का शपथ ग्रहण कार्यक्रम मुनि दीपकुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ अमोलक भवन में हुआ। तेयुप सदस्यों द्वारा विजय गीत का संगान किया गया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन तेरापंथ सभा अध्यक्ष नवरतन डागा द्वारा किया गया। निर्वाचन अधिकारी महेंद्र बाफना ने अपने विचार व्यक्त किए। निवर्तमान अध्यक्ष निर्मल बैंगानी द्वारा नवनिर्वाचित अध्यक्ष वीरेंद्र डागा के साथ ही नई कार्यपरिषद को शपथ दिलाई गई।

शपथ ग्रहण समारोह के आयोजन

विजयनगर।

तेयुप, विजयनगर के नव निर्वाचित अध्यक्ष अमित दक एवं उनकी नव मनोनीत टीम का शपथ ग्रहण का आयोजन साध्वी प्रमिला कुमारी जी के सान्निध्य में जैन संस्कार विधि द्वारा संपन्न हुआ। संस्कारक की भूमिका में पूर्व अध्यक्ष राकेश दुधोड़िया एवं सह-संस्कारक की भूमिका में पूर्व अध्यक्ष दिनेश मरोठी ने अपने दायित्व का निर्वहन करते हुए विधि-विधान एवं मंगलमंत्रोच्चार से कार्यक्रम की शुरुआत की।

इस अवसर पर सर्वप्रथम निवर्तमान अध्यक्ष पवन मांडोत ने नव निर्वाचित अध्यक्ष अमित दक को अध्यक्ष पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। तत्पश्चात अमित दक ने अपने प्रबंध मंडल एवं कार्यसमिति की घोषणा की एवं सभी को शपथ दिलाई।

इस अवसर पर अभातेयुप निवर्तमान अध्यक्ष विमल कटारिया ने नवीन टीम को शुभकामनाएँ प्रेषित की एवं अपने दायित्वों के प्रति सजग किया। अभातेयुप राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष दिनेश पोखरना ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया, सभा अध्यक्ष राजेश चावत, महिला मंडल अध्यक्ष प्रेम भंसाली आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। साध्वीश्री जी ने मंगल आशीर्वचन देते हुए नव मनोनीत टीम को शुभकामनाएँ संप्रेषित की एवं उपस्थित युवाओं को जप, तप से जुड़ने के लिए प्रेरित किया।

समियाए धम्मे

पेटलावद।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा समियाए धम्मे का आयोजन मुनि वर्धमान कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में किया गया। मुनिश्री ने सभी को अधिक से अधिक त्याग-प्रत्याख्यान की प्रेरणा दी।

तेयुप अध्यक्ष रूपम पटवा व मंत्री महेश भंडारी ने बताया कि मुनिश्री की प्रेरणा से श्रावक समाज ने उक्त आयोजन में उत्साहपूर्वक भाग लिया। कुल १६६ सामायिक हुई। आयोजन में तेरापंथ सभा, महिला मंडल, तेयुप, किशोर मंडल, कन्या मंडल द्वारा सहयोग प्राप्त हुआ।

समियाए धम्मे की कार्यशाला का आयोजन

भीलवाड़ा।

तेरापंथ नगर, भीलवाड़ा स्थित महाश्रमण सभागार में अभातेयुप के तत्त्वावधान में आध्यात्मिक उपक्रम 'मैं हूँ सामायिक साधक' के अंतर्गत समियाए धम्मे कार्यशाला का आयोजन तेयुप संस्था की नव गठित कार्यकारिणी द्वारा किया गया। कार्यशाला में तेरापंथ सभा, तेमम, तेयुप, टीपीएफ, तेरापंथ किशोर मंडल एवं तेरापंथ कन्या मंडल के श्रावक-श्राविकाएँ तेरापंथ नगर स्थित महाश्रमण सभागार पहुँचे। सभागार के पास कार्यशाला के तहत सामायिक एवं गुरुवंदना की गई।

कार्यशाला में चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष प्रकाश सुतरिया, तेयुप अध्यक्ष संदीप चोरड़िया, तेयुप मंत्री पीयूष रांका, सहमंत्री वरुण पितलिया, सामायिक साधक प्रभारी सुमित झाबक, योगक्षेम सुतरिया, तेमम अध्यक्ष मीना बाबेल, तेमम मंत्री रेणु चोरड़िया, मदन रांका, राहुल रांका, नयन रांका, ऋषि दुगड़, आशा बाबेल, संतोष सिंघी, प्रेम देवी जैन, उषा जैन, प्रेमलता कांठेड, चंद्रकांता चोरड़िया आदि श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित थे।

तेरापंथी सभा अध्यक्ष भैरूलाल चोरड़िया ने कहा कि तेयुप द्वारा उक्त कार्यशाला समियाए धम्मे के दौरान जो उत्साह दिखा वो सराहनीय है। तेयुप संरक्षक नवरतनमल झाबक ने कार्यशाला में आए सभी का आभार प्रकट किया। तेयुप अध्यक्ष संदीप चोरड़िया एवं मंत्री पीयूष रांका ने कार्यशाला की संपूर्ण देखरेख कर आयोजन सफल बनाया। कार्यशाला में तेयुप के कई सदस्यगण उपस्थित थे।

तेरापंथ स्थापना दिवस का आयोजन

सूरत।

तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में साध्वी लब्धिश्री जी एवं समणी निर्देशिका अक्षयप्रज्ञा जी के सान्निध्य में तेरापंथ स्थापना दिवस व गुरु पूर्णिमा के अवसर पर विशेष कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वी लब्धिश्री जी के नमस्कार महामंत्र से हुआ। तेरापंथ कन्या मंडल ने प्रस्तुति दी।

समणी प्रणवप्रज्ञा जी ने सुमधुर गीतिका का संगान किया। समणी निर्देशिका अक्षयप्रज्ञा जी ने प्रेरक वक्तव्य दिया। साध्वी आराधनाश्री जी ने तेरापंथ की विशेषताओं का विस्तृत वर्णन किया। साध्वी लब्धिश्री जी ने अपना उद्बोधन दिया। इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने गीतिका का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री नरपत कोचर ने किया।

तेरापंथ स्थापना दिवस एवं आचार्य भिक्षु जन्मोत्सव कार्यक्रम

तारानगर।

तेरापंथ स्थापना दिवस पर सभा द्वारा आयोजित भिक्षु भजन संध्या शासनश्री साध्वी प्रसमरति जी के सान्निध्य में मनाया गया। कार्यक्रम का संचालन हर्षिता बोथरा द्वारा किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वी कारुण्यप्रभा जी द्वारा मंगलाचरण से हुई। साध्वी चंद्रयशा जी, साध्वी डॉ० ललित रेखा जी, साध्वी अमितयशा जी ने तेरापंथ धर्मसंघ की स्थापना एवं आचार्य श्री भिक्षु के बारे में जानकारी देते हुए गीतिका प्रस्तुत की।

महिला मंडल अध्यक्ष सरोज देवी बरमेचा, तारा देवी सुराणा, कन्या मंडल, विनोद बोथरा, हितेश सुराणा, अरिहंत सुराणा, ऋषभ श्यामसुखा, वर्षा बरड़िया, लक्ष्मी देवी बरड़िया, कंचन देवी बरड़िया, तारा देवी सुराणा, कमला देवी बरड़िया, अनामिका जैन, दिव्या जैन आदि द्वारा कार्यक्रम में रंगारंग प्रस्तुति की गई। साथ ही समाज के सुमधुर गायकों द्वारा गीतिका से कार्यक्रम में चार चाँद लगे। कार्यक्रम का सीधा प्रसारण तारानगर सभा के फेसबुक पर किया गया।

आचार्य भिक्षु जन्मोत्सव कार्यक्रम में सभा के मंत्री मांगीलाल बरमेचा ने सभी का स्वागत किया एवं आभार व्यक्त किया। महिला मंडल अध्यक्षा सरोज बरमेचा ने साध्वीश्री जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। साध्वीश्री जी के मुखारविंद से मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

तेरापंथ स्थापना दिवस

इचलकरंजी।

साध्वी प्रज्ञाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ स्थापना दिवस कार्यक्रम आयोजित किया गया। महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण किया गया। साध्वी विनयप्रभा जी एवं साध्वी प्रतिकप्रभा जी ने गीतिका के माध्यम से प्रस्तुति दी। साध्वी सरलप्रभा जी ने अपने उद्गार व्यक्त किए।

साध्वी प्रज्ञाश्री जी ने कहा कि केलवा की अंधेरी ओरी तेरापंथ की जन्मभूमि बनी। आचार्य भिक्षु ने आगम सम्मत मार्ग का स्वीकरण किया। आचार्य भिक्षु सत्यान्वेषक अलबेले संत थे। आपकी गुरुभक्ति बेजोड़ थी।

कार्यक्रम में सभा अध्यक्ष महावीर आंचलिया, तेयुप सलाहकार विकास सुराणा, महिला मंडल अध्यक्षा जयश्री जोगड़, पवन बालड़ आदि ने वक्तव्य, कविता, गीत आदि द्वारा भावांजलियाँ अर्पित की। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री पुष्पराज संकलेचा ने किया।

त्रिदिवसीय आध्यात्मिक अनुष्ठान प्रारंभ

उज्जैन।

बोधि दिवस : साध्वी कीर्तिलता जी के सान्निध्य में त्रिदिवसीय आध्यात्मिक अनुष्ठान प्रारंभ हुआ। साध्वी कीर्तिलता जी ने आचार्य भिक्षु के २६६वें जन्मदिवस पर कहा जहर को भी अमृत मानकर पीने वाले आचार्य भिक्षु के जीवन में गहराई भी थी, ऊँचाई भी थी और सच्चाई भी थी।

साध्वी पूनमप्रभा जी ने अपने संयोजकीय वक्तव्य में कहा कि आज एक महापुरुष का जन्मदिवस है जिससे संपूर्ण धर्मसंघ में उल्लास छाया रहा। साध्वी श्रेष्ठप्रभा जी ने कहा कि प्रत्युत्पन्न मेधा के धनी आचार्य भिक्षु ने अनुकूल व प्रतिकूल सबको सहन किया। उपासिका वीरबाला ने भी अपने विचार रखे।

चातुर्मासिक चतुर्दशी : साध्वी कीर्तिलता जी के सान्निध्य में चतुर्दशी की शुरुआत भक्तांबर के जप से हुई। बड़ी संख्या में लोगों ने जप में हिस्सा लिया। साध्वी कीर्तिलता जी ने चातुर्मास चतुर्दशी के महत्त्व को समझाते हुए कहा कि चातुर्मास में सिर्फ ढाई अक्षर की साधना करनी होती है। ढाई अक्षर को छोड़ना है आज जीवन रूपी खेती में अध्यात्म रूपी बीजों का रोपण करने का दिन है। साध्वी शांतिलता जी ने कहा कि शरीर, मन और आत्मा को स्वस्थ्य रखने का विज्ञान है चातुर्मास। साध्वी श्रेष्ठप्रभा जी ने अपने संयोजकीय वक्तव्य में सबको प्रेरणा दी। साध्वी पूनमप्रभा जी ने गीत का संगान किया।

तेरापंथ स्थापना दिवस : साध्वी कीर्तिलता जी के सान्निध्य में तेरापंथ धर्मसंघ का २६२वाँ स्थापना दिवस मनाया गया। साध्वीश्री जी ने अपने प्रवचन में कहा कि आचार्यश्री भिक्षु ने त्याग और बलिदान की पृष्ठभूमि में धर्म क्रांति की।

सत्य का साक्षात्कार करने के लिए उन्होंने धर्मक्रांति की उस समय पूरे समाज में उथल-पुथल मच गई, फिर भी सत्य को पाने के लिए अपने गुरु का साथ छोड़ने में भी नहीं हिचके। उसी की निष्पत्ति है तेरापंथ। साध्वी शांतिलता जी, साध्वी पूनमप्रभा जी, साध्वी श्रेष्ठप्रभा जी ने रोचक कार्यक्रम किए।

मंत्र दीक्षा : साध्वी कीर्तिलता जी के सान्निध्य में बच्चों को मंत्र दीक्षा का सुंदर कार्यक्रम चला। अभातेयुप द्वारा निर्देशित मंत्र दीक्षा के कार्यक्रम को साध्वीश्री जी ने बड़े ही सुंदर ढंग से बच्चों को समझाया। साध्वीश्री जी ने नमस्कार मंत्र की महत्ता को बताते हुए कहा कि यह मंत्र हमें धरोहर के रूप में मिला है, इसमें अहं से अर्हम बनने का आमोघ साधन है। अरिहंत अतिशय धारी पुरुष होते हैं।

अरिहंत जन्म-मरण की परंपरा को तोड़ने वाले होते हैं, ऐसे मंत्र को जन्मघुट्टी की तरह प्रत्येक बच्चे को जन्म से ही पिलाना चाहिए। आपने सभी बच्चों को मंत्र दीक्षा दिलाई। साध्वी शांतिलता जी ने कहा कि मंत्र दीक्षा संस्कारों की दीक्षा है। तेयुप, उज्जैन द्वारा उपस्थित लगभग १५ बच्चों को पुरस्कार दिया गया।

✦ ज्ञानवान व्यक्ति अनेक समस्याओं का समाधायक बन सकता है।

—आचार्यश्री महाश्रमण

मंत्र दीक्षा के विविध आयोजन

बच्चों के आध्यात्मिक विकास का माध्यम है ज्ञानशाला

अमराईवाड़ी

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप के तत्त्वावधान में मंत्र दीक्षा का कार्यक्रम किया गया। मंगलाचरण तेयुप द्वारा किया गया। तेयुप अध्यक्ष दिलीप सिसोदिया द्वारा स्वागत वक्तव्य दिया गया। ज्ञानशाला में २६ ज्ञानार्थी और ६ प्रशिक्षिकाओं की उपस्थिति रही।

उपासिका संगीता सिंघवी के द्वारा अमर कुमार की कहानी के द्वारा बच्चों को मंत्र दीक्षा दिलवाई गई। कार्यक्रम का आभार ज्ञापन दिनेश टुकल्या द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन पंकज डांगी ने किया।

साहूकारपेट, चेन्नई

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा तेरापंथ भवन में मंत्र दीक्षा का कार्यक्रम आयोजित हुआ। साध्वीश्री जी ने कहा कि बच्चे परिवार की शान हैं, समाज, राष्ट्र की उज्ज्वल खान हैं। साध्वीश्री जी ने आगे कहा कि जीवन निर्माण और विकास के अनेक माध्यमों में एक सशक्त माध्यम है—मंत्र दीक्षा। हर अभिभावक अपने बच्चों की मंत्र दीक्षा के प्रति जागरूक बने, क्योंकि इससे आपके बच्चों का निर्माण ही नहीं होगा, बल्कि आपका भी भविष्य सुंदर और सुखद बनेगा।

साध्वीश्री जी ने कहा कि तेरापंथ सभा ज्ञानशाला का संचालन करती है। तेयुप एवं महिला मंडल व्यवस्था पक्ष को मजबूत बनाते हैं। इस हेतु प्रशिक्षिकाएँ धन्यवाद की पात्र हैं, जो बच्चों के सुंदर भविष्य निर्माण में अपने समय, श्रम, शक्ति का नियोजन कर रही हैं।

साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने मंच संचालन करते हुए कहा कि ज्ञानशाला संस्कारों के अभ्युदय की महत्त्वपूर्ण शाला है। तेयुप अध्यक्ष मुकेश नवलखा ने स्वागत भाषण देते हुए शहर की २४ ज्ञानशालाओं के बच्चों की मंत्र दीक्षा में सहभागिता के लिए साधुवाद दिया। मोगापेर ज्ञानशाला के बच्चों ने मंगल संगान किया। साहूकारपेट, ई एमआर, नई धोबीपेट, पल्लावरम ज्ञानशाला के बच्चों ने मनमोहक प्रस्तुतियाँ दी। दीया बोहरा ने भक्तामर स्रोत के कुछ पदों का उच्चारण किया। रंजीतमल अक्षयकुमार छल्लानी प्रायोजक परिवार का सम्मान तेरापंथ सभा अध्यक्ष प्यारेलाल पितलिया एवं तेयुप अध्यक्ष ने किया। तेयुप मंत्री संतोष सेठिया ने आभार ज्ञापन किया।

नवसारी

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप ने मंत्र दीक्षा कार्यक्रम मुनि आलोक कुमार जी के सान्निध्य में बिलिमोरा में आयोजित किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि लक्ष्य कुमार जी ने किया। मुनि आलोक कुमार जी के सान्निध्य में कार्यक्रम के अंतर्गत नवसारी के कुल २१ बच्चों ने नमस्कार महामंत्र के सामुहिक संगान के साथ मंत्र दीक्षा ग्रहण की। मुनिश्री ने अपने प्रवचन में मंत्र दीक्षा को महत्त्वपूर्ण उपक्रम बताते हुए ज्ञानशाला के बच्चों को देव, गुरु और धर्म के विषय में जानकारी दी। मुनि हिमकुमार जी ने गीतिका द्वारा नमस्कार महामंत्र का महत्त्व समझाया।

इस कार्यक्रम में अतिथि विशेष में अनिल चंडालिया, प्रवीण मेड़तवाल, अंजना झाबक, राजेश बाफना और भावेश हिरण ने अपनी उपस्थिति दी। तेरापंथ महिला मंडल, नवसारी की भी उपस्थिति रही। इस मंत्र दीक्षा कार्यक्रम में डूंगरी, चिखली, बिलीमोरा, अमलसाड, खारेल के और आसपास के कई क्षेत्र के बच्चों ने अपनी सहभागिता दर्ज कराई।

राजलदेसर

साध्वी डॉ० परमयशा जी के सान्निध्य में मंत्र दीक्षा का कार्यक्रम आयोजित किया गया। तेरापंथ भवन में आयोजित कार्यक्रम में डॉ० साध्वी परमयशा जी ने कहा कि जिसके पास हो नवकार, वह पहुँच जाता है भवपार। उसका क्या कर सकता है संसार, हर वक्त रखें नवकार की कार। फिर किसी ताबीज तंत्र-मंत्र की जरूरत नहीं। आगे कहा कि मंत्र दीक्षा संस्कार जागरण का वरदान है। बच्चों में धर्म के बीज बोना, उनमें संस्कारों का रोपण होना परम आवश्यक है।

इस अवसर पर ज्ञानशाला के बच्चों ने मंत्र दीक्षा का संकल्प ग्रहण किया एवं प्रशिक्षिकाओं के साथ अर्हम वंदना गीत की सुमधुर प्रस्तुति दी। कार्यक्रम को सफल बनाने में तेमम एवं कन्या मंडल का विशेष योगदान रहा। तेयुप द्वारा बच्चों को सम्मानित किया गया।

रायपुर

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा तेरापंथ सभा ज्ञानशाला के सहयोग से तेरापंथ अमोलक भवन में मुनि दीपकुमार जी के सान्निध्य में मंत्र दीक्षा का आयोजन किया गया। जिसमें ७१ बच्चों ने सहभागिता दर्ज की। मुनिश्री ने जीवन में मंत्रों के महत्त्व को समझाते हुए प्रकाश डाला।

कार्यक्रम में ज्ञानशाला संयोजिका प्रतिभा पोखरना ने ज्ञानशाला की उपयोगिता का महत्त्व बताया। संचालन तेयुप मंत्री गौरव दुगड़ ने किया।

वडोदरा

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा साध्वी सम्यकप्रभा जी के सान्निध्य में मंत्र दीक्षा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वी सम्यकप्रभा जी द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुई। सभा अध्यक्ष हस्तीमल मेहता ने सभी का स्वागत किया। तेयुप अध्यक्ष पंकज बोल्या एवं अभातेयुप सदस्य दीपक श्रीमाल ने मंत्र दीक्षा के कार्यक्रम पर अपना वक्तव्य दिया। ज्ञानशाला के प्रभारी नवरतन पोखरना तथा ज्ञानशाला की संयोजिका स्नेहलता समदरिया ने अपने भाव व्यक्त किए।

साध्वी सौम्यप्रभा जी ने गीतिका के माध्यम से अपने भाव प्रकट किए। साध्वी मलयप्रभा जी ने नवकार मंत्र का महत्त्व समझाया। ज्ञानशाला के बच्चों ने गीतिका, नाटक एवं नृत्य के द्वारा अपनी प्रस्तुति दी।

साध्वी सम्यकप्रभा जी ने बच्चों को मंत्र दीक्षा के बारे में कहानी के माध्यम से समझाया तथा अनेकों संकल्पों से संकल्पित करवाया। अंत में साध्वीश्री जी ने सभी बच्चों को मंत्र दीक्षा से दीक्षित किया।

आभार ज्ञापन निवर्तमान तेयुप अध्यक्ष महावीर हिरण ने किया। कार्यक्रम का संचालन ज्ञानशाला की प्रशिक्षिका मंजु श्रीमाल ने किया।

इचलकरंजी

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा मंत्र दीक्षा का आयोजन साध्वी प्रज्ञाश्री जी के सान्निध्य में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी प्रज्ञाश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र उच्चारण के साथ हुआ। तेयुप के साथियों ने विजय गीत का संगान किया।

साध्वी विनयप्रभा जी व साध्वी प्रतीकप्रभा जी ने गीत द्वारा मंत्र दीक्षा एवं ज्ञानशाला की उपयोगिता के बारे में बताया। ज्ञानार्थियों को त्रिपदी वंदना करवाई गई। साध्वी सरलप्रभा जी ने अपने उद्बोधन में नमस्कार महामंत्र के महत्त्व को इतिहास की कुछ घटनाओं के माध्यम से बताया। साध्वी प्रज्ञाश्री जी ने ज्ञानार्थियों को मंत्र दीक्षा का महत्त्व समझाते हुए दीक्षा प्रदान की।

कुल ३३ बच्चों को मंत्र दीक्षा दिलवाई गई। मंत्र दीक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत ज्ञानशाला बच्चों के द्वारा सुंदर प्रस्तुति दी गई। तेयुप अध्यक्ष मुकेश भंसाली एवं पूर्व अध्यक्ष विकास सुराणा और ज्ञानशाला प्रशिक्षिका जयश्री जोगड़ ने मंत्र दीक्षा की जानकारी देते हुए सभी बच्चों को प्रेरणा प्रदान की।

अंत में मंत्र दीक्षा संयोजक महावीर भंसाली ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन तेयुप मंत्री रोहित भंसाली ने किया।

बारडोली

अभातेयुप के निर्देशन के तेयुप द्वारा तेरापंथ भवन में मंत्र दीक्षा कार्यक्रम आयोजित किया गया। ज्ञानशाला के लगभग ५५ बच्चों को मंत्र दीक्षा दिलवाई गई। मंगलाचरण ज्ञानशाला व प्रशिक्षिकागण बारडोली द्वारा किया गया।

अभातेयुप मंत्र दीक्षा प्रभारी रौनक सरणोत, राष्ट्रीय संगठन मंत्री जयेश मेहता ने अपने वक्तव्य प्रदान कर बच्चों में ऊर्जा का संचार किया। कार्यक्रम में तेयुप के अध्यक्ष साहिल बाफना, निवर्तमान अध्यक्ष महावीर दक, संजय एल बडोला, संजय आर बडोला, पीयूष बाफना, कार्यक्रम के संयोजक अंकुर मेहता, मुदित मेहता, ज्ञानशाला संयोजक पंकज बाफना, किशोर मंडल टीम के पूर्व संयोजक उत्सव मेहता, ज्ञानशाला मुख्य प्रशिक्षिका मीना मेहता, तेमम मंत्री धर्मिष्ठा मेहता की उपस्थिति रही। समस्त बच्चों को स्मृति भेंट प्रदान की गई।

जसोल

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप के तत्त्वावधान में मंत्र दीक्षा कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुनि धर्मेश कुमार जी के सान्निध्य में कार्यक्रम के अंतर्गत कुल ७४ बच्चों ने नमस्कार महामंत्र के सामुहिक संगान के साथ मंत्र दीक्षा ग्रहण की। मुनि धर्मेश कुमार जी ने अपने वक्तव्य में मंत्र दीक्षा को महत्त्वपूर्ण उपक्रम बताते हुए ज्ञानशाला के बच्चों को देव, गुरु और धर्म के विषय में जानकारी दी।

तेयुप अध्यक्ष जितेंद्र मांडोत ने बताया कि हम मंत्र दीक्षा के माध्यम से अभातेयुप की ३५० शाखाएँ पूरे देश में प्रतिवर्ष समाज के छोटे-छोटे बच्चों में जैन धर्म, तेरापंथ धर्म आदि आध्यात्मिक संस्कारों के सिंचन का कार्य कर रही हैं। परिषद मंत्री दिनेश वडेरा ने अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर तेरापंथ सभा, तेयुप, तेमम, कन्या मंडल, किशोर मंडल एवं ज्ञानशाला परिवार के सदस्य उपस्थित थे।

बोलाराम

साध्वी काव्यलता जी ने बच्चों को मंत्र दीक्षा का संकल्प करवाते हुए कहा कि नमस्कार महामंत्र १४ पूर्वों का सार है। इसलिए इसे सर्वश्रेष्ठ मंत्र माना गया है। साध्वीश्री जी ने बच्चों को प्रतिदिन २७ बार महामंत्र के स्मरण करने का संकल्प करवाया। दुर्व्यसनों से दूर रहकर माता-पिता के प्रति विनम्र रहने की विशेष प्रेरणा दी। साध्वी ज्योतियशा जी ने कहा कि बच्चा अगर हमेशा मधुर वाणी का प्रयोग करता है तो वह सबको प्रिय लगता है। साध्वी सुरभिप्रभा जी ने मधुर गीत का संगान कर सभा को मंत्रमुग्ध कर दिया।

कार्यक्रम में तेमम की नवनिर्वाचित अध्यक्ष अनिता गीड़िया एवं तेयुप के नवनिर्वाचित अध्यक्ष प्रवीण श्यामसुखा को बोलाराम के सभा अध्यक्ष रतनलाल सुराणा, महिला मंडल की अध्यक्ष दमयंती जैन ने प्रतीक पहनाकर सम्मान किया। कार्यक्रम में तेरापंथी सभा के पूर्व अध्यक्ष राजकुमार सुराणा ने बोलाराम क्षेत्र को हैदराबाद तेरापंथ श्रावक समाज की राजधानी के रूप में बताते हुए प्रसन्नता जाहिर की। संचालन साध्वी ज्योतियशा जी ने किया।

कोयंबटूर

अभातेयुप द्वारा निर्देशित मंत्र दीक्षा का कार्यक्रम तेयुप द्वारा मुनि सुधाकर जी, मुनि नरेश कुमार जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत बच्चों के भक्तांबर स्रोत के मंगलाचरण से हुई। छोटे से ज्ञानार्थी आर्यन बाफना ने महावीर अष्टकम का संगान किया। मुनि सुधाकर जी ने बच्चों को मंत्र दीक्षा प्रदान की। कार्यक्रम में लगभग २५ बच्चे उपस्थित रहे। तत्पश्चात हनुमंतनगर, बैंगलोर, तेयुप अध्यक्ष धर्मेश कोठारी, निवर्तमान अध्यक्ष पवन बोथरा, कोयंबटूर सभा अध्यक्ष प्रेम सुराणा एवं ज्ञानशाला प्रभारी मंजु गीड़िया ने अपने विचार रखे।

वापी

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप ने मंत्र दीक्षा का कार्यक्रम साध्वी चरितार्थप्रभा जी के सान्निध्य में आयोजित किया। कार्यक्रम के अंतर्गत कुल ७५ बच्चों ने नमस्कार महामंत्र के सामुहिक संगान के साथ मंत्र दीक्षा ग्रहण की। साध्वीश्री जी ने अपने प्रवचन में मंत्र दीक्षा को महत्त्वपूर्ण उपक्रम बताते हुए ज्ञानशाला के बच्चों को देव, गुरु और धर्म के विषय में जानकारी दी।

तेयुप अध्यक्ष कुलदीप कोठारी ने मंत्र दीक्षा के विषय में संपूर्ण जानकारी दी। कार्यक्रम में सभा अध्यक्ष संपत कोठारी पूरी टीम के साथ तथा निवर्तमान सभा अध्यक्ष रमेश कोठारी, अभातेयुप सदस्य संजय भंडारी, ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका हेमा मेहता, कन्या मंडल संयोजिका डिंपल डूंगरवाल, महिला मंडल अध्यक्ष करुणा वागरेचा, किशोर मंडल प्रभारी प्रिंस लुणिया, तेयुप अध्यक्ष कुलदीप कोठारी उनकी टीम के साथ उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के दौरान गत वर्ष में ज्ञानशाला में हुई गतिविधियों के पुरस्कार प्रायोजक मुस्कान राकेश बोथरा द्वारा वितरित किए गए। अभातेयुप सदस्य संजय भंडारी ने बच्चों को दीपावली पर पटाखे न फोड़ने की प्रेरणा दी। वापी तेयुप द्वारा ५० बच्चों ने गत दीपावली पर पटाखे नहीं उपयोग में लिए उन्हें भी पुरस्कृत किया गया। तेयुप मंत्री विजय बोथरा ने आभार व्यक्त किया।

✦ समता की साधना जैन-अजैन सबके लिए उपयोगी होती है। समता धर्म है और विषमता पाप है।

– आचार्यश्री महाश्रमण

सरगम 'सुरों का महासंग्राम' का प्रथम सेमीफाइनल आयोजित

विजयनगर।

अभातेयुप निर्देशित सरगम 'सुरों का महासंग्राम' के प्रथम सेमीफाइनल का आयोजन कासिया भवन ऑडिटोरियम में तेयुप, विजयनगर द्वारा आयोजित किया गया। सर्वप्रथम कार्यक्रम की शुरुआत नवकार मंत्र के सामूहिक उच्चारण से हुआ एवं इस कार्यक्रम के उद्घाटन की घोषणा अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप कोठारी ने की।

तेयुप, विजयनगर द्वारा संचालित विजय स्वर संगम के द्वारा विजय गीत का संगान किया गया। तेयुप, विजयनगर अध्यक्ष अमित दक ने अपने स्वागत वक्तव्य में उपस्थित सभी अभातेयुप परिवार, प्रायोजक परिवार एवं श्रोतागण का स्वागत करते हुए परिषद के कार्यों की जानकारी सभी के सम्मुख प्रस्तुत की एवं राज्य सरकार के साथ मिलकर रक्तदान के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों की जानकारी दी।

सेमीफाइनल में संपूर्ण भारतवर्ष से कुल तेरह युगल प्रतिभागियों ने भाग लिया।

सभी प्रतिभागियों ने दो चरणों में अपनी प्रस्तुति दी।

प्रथम चरण में गुरु आराधना एवं द्वितीय चरण में रिश्तों के ऊपर सभी मनमोहक प्रस्तुतियाँ प्रदान कीं। इस आयोजन में कटक, त्रिपुर, हैदराबाद, मुंबई, अहमदाबाद, बैंगलोर एवं नवसारी से कुल तेरह प्रतिभागियों ने भाग लिया एवं छः प्रतिभागियों को सीधे फाइनल में प्रवेश मिला एवं एक टीम को रिजर्व में स्थान दिया गया है।

इस कार्यक्रम में निर्णायक की भूमिका का निर्वहन दिगंबर राव चौहान, शालिनी जैन ने किया। अभातेयुप अध्यक्ष ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि तेयुप, विजयनगर अपने आपमें एक विशिष्ट परिषद है, यहाँ जिस भी कार्यक्रम का आयोजन होता है वो अपने आपमें विशिष्ट बन जाता है।

अभातेयुप निवर्तमान अध्यक्ष विमल कटारिया ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि संगीत प्रतियोगिता के क्षेत्र में सरगम एक ब्रांड बन चुका है और यह मंच प्रतिभाओं को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाने का अवसर देता है। राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप कोठारी ने फाइनल में जगह बनाने वाले प्रतिभागियों के नामों की घोषणा की। कटक से पूजा चोरड़िया-प्रियंका जैन, हनुमंतनगर से राहुल मेहता-मोहित दक, त्रिपुर से ऋषभ आंचलिया-संतोष आंचलिया, डोंबिवली से करिश्मा कोठारी-कोमल इंदोदिया, चेम्बूर से तारा आच्छा-अनिक आच्छा, अहमदाबाद से दीपक संचेती-धीरज पोखरणा ने फाइनल में अपना स्थान सुनिश्चित किया।

कार्यक्रम के मुख्य प्रायोजक गुरु पुणवानी प्रोपटिज़ प्राइवेट लिमिटेड से हनुमानमल, संजय कुमार बैद, सह-प्रायोजक बाबूलाल दिनेश गन्ना एवं सुरेश करण मांडोत, मेडिस्मिथ लैब्ज़ एवं सह-प्रायोजक माणकचंद गौतमचंद खाब्या एवं भैरू गारमेंट्स का स्मृति चिह्न से सम्मान किया।

इस अवसर पर अभातेयुप से राष्ट्रीय उपाध्यक्ष-प्रथम अमित नाहटा, द्वितीय महेश बाफना, सहमंत्री अभिषेक पोखरना, कोषाध्यक्ष दिनेश पोखरना, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के राष्ट्रीय महामंत्री हिम्मत मांडोत, सभा अध्यक्ष राजेश चावत, महिला मंडल अध्यक्ष प्रेम भंसाली, सरगम के राष्ट्रीय प्रभारी लक्की कोठारी, सह-प्रभारी सुनिल चंडालिया, सरगम दक्षिण प्रभारी अभिषेक कावड़िया, तेरापंथ टाइम्स के कार्यकारी संपादक दिनेश मरोठी, नेत्रदान प्रभारी नवनीत मूथा, विशाल पितलिया, आलोक छाजेड़, सतीश पोरवाड़, पवन मांडोत, परिषद उपाध्यक्ष मनोज बरड़िया, प्रवीण गन्ना, सहमंत्री हितेश भटेवरा, कोषाध्यक्ष राकेश पोखरना, संगठन मंत्री दीपक भूरा, स्थानीय प्रभारी देवांग बैद एवं सह-प्रभारी विमल पारेख, जैन युवा संगठन के अध्यक्ष सुभाष गोटावत, अभातेयुप परिवार एवं संपूर्ण परिषद के सभी कार्यकर्ताओं आदि की गरिमामय उपस्थिति रही।

मंच पर सभी सहयोगी परिवार, प्रतिभागी एवं निर्णायकगण का सम्मान किया गया।

इस कार्यक्रम का संचालन सोनल पीपाड़ा एवं मंच संचालन परिषद मंत्री विकास बांठिया ने किया एवं आभार ज्ञापन परिषद सहमंत्री कमलेश चोपड़ा ने किया।

प्रवचन करने से निर्जरा व परोपकार दोनों होते हैं : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, १७ अगस्त, २०२१

अर्हत् वाङ्मय के उद्गाता, आचार्यश्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि दुनिया में तीर्थंकर बनने का क्रम चलता रहता है। ऐसा कोई समय नहीं होता जब दुनिया में कोई भी तीर्थंकर न हो। तीर्थंकर भी १-२ ही नहीं कम से कम जघन्य रूपेण २० तीर्थंकर तो होते ही हैं। ज्यादा से ज्यादा एक साथ १७० तीर्थंकर दुनिया में हो सकते हैं।

प्रत्येक भरत-ऐरावत क्षेत्र में २४-२४ तीर्थंकर प्रत्येक अवसर्पिणी काल में और उत्सर्पिणी काल में होते हैं। पाँच भरत क्षेत्र, पाँच ऐरावत क्षेत्र हैं। महाविदेह क्षेत्र में तो कम से कम २० तीर्थंकर रहते ही हैं।

इस सूत्र में शास्त्रकार ने बताया है कि आगामी उत्सर्पिणी काल में होने वाले तीर्थंकरों के बारे में बताया है। अवसर्पिणी काल में ह्रास होता है, उत्सर्पिणी काल में उन्नति होती है। प्रत्येक अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी काल में छः-छः अर होते हैं। एक कालचक्र में १२ अर हो जाते हैं।

अवसर्पिणी काल के प्रथम अर के मनुष्यों की आयु ३ पल्योपम की, दूसरे में २ पल्योपम, तीसरे में एक पल्योपम यों करते-करते पाँचवें आरे में १००-१२५ वर्ष की आयु रहती है। पाँचवें के अंत में २० वर्ष छठे में १६ वर्ष का आयुष्य होता है। अवगाहना भी ३ कोस से करते-करते छठे में तो लगभग एक हाथ रह जाती है। उत्सर्पिणी काल आता है, तब इससे उल्टा होता है। विकास का क्रम रहता है। सुख-दुःख का भी विकास-ह्रास होता रहता है।

बारह अरों को समझाने का बड़ा सुंदर तरीका है—घड़ी। अवसर्पिणी काल एक से छः अंक छः अर है। उत्सर्पिणी काल के ७ से १२ छः अंक छः अर हैं। घड़ी कालचक्र का ही प्रारूप है।

यहाँ शास्त्रकार ने आगामी उत्सर्पिणी काल की बात बताई है। यहाँ नौ व्यक्तियों का उल्लेख है कि ये नौ व्यक्ति आगामी तीर्थंकर होने वाले हैं। इनके नाम हैं—वासुदेव कृष्णा, बलदेव राम, उदकपेढ़ालपुत्र, पोट्टिल, गृहपति शतक, निर्ग्रन्थ दारूक, निग्रंथी पुत्र सत्यकी, अम्मड़ परिव्राजक, आर्या सुपार्श्वा। ये तीर्थंकर बन सिद्ध-मुक्त बनेंगे। ये चातर्याम धर्म की प्ररूपणा कर जन-कल्याण का काम करेंगे।

तीर्थंकर तारणहार होते हैं। वे स्वयं तरते हैं और दूसरों को तारने का काम भी करते हैं। केवली मौन होकर बैठ सकते हैं, पर तीर्थंकर मौन होकर नहीं बैठते, प्रवचन देकर जन-कल्याण करते हैं। भगवान महावीर ने लगभग ३० वर्षों तक जनोद्धार का काम किया। दायित्व का निर्वाह किया।

तीर्थंकरों की जीवों के प्रति मानो दया है, उपकार है, इसलिए वे प्रवचन करते हैं। इस व्याख्यान-प्रवचन का बड़ा लाभ होता है कि सुनने वालों को बहुत उपकृत होने का मौका मिल सकता है। व्याख्यान देने में साधु आलस्य न करे। श्रम का चिंतन न करें। हितोपदेश करने वाला व्यक्ति है, वो स्वयं पर भी अनुग्रह करता है और दूसरों पर भी अनुग्रह करता है।

प्रवचन सुनने के साथ सामायिक होती है। शुभ योग के साथ निर्जरा भी हो सकती है, आध्यात्मिक लाभ मिल सकता है। अनेक तात्त्विक जानकारियाँ मिल सकती हैं। जीवन की समस्या का समाधान हो सकता है। प्रवचन को ग्राहक बुद्धि से सुनें तो व्याख्यान देने की कला का भी विकास हो सकता है। हम तीर्थंकरों से ये प्रेरणा लें कि हम व्याख्यान देने में आलस्य न करें। निर्जरा और परोपकार की स्थिति से अनुगृहीत होते रहें, यह काम्य है।

माणक महिमा का विवेचन करते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि अब माणक गणी का सरदारशहर में पदारोहण हो गया। अब वे जनपद विहार कर रहे हैं। वि०सं० १९५० का प्रथम पावस प्रवास सरदारशहर में किया। सरदारशहर प्रवास बाद हरियाणा के नोहर सरसा भादरा क्षेत्र में पधारे। हिसार पधारे। प्रथम मर्यादा महोत्सव हांसी में किया। स्थानकवासी संतों से मुनि कालू जी छापर से मिलना चर्चा का प्रसंग समझाया।

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

मुख्य नियोजिका जी ने पदार्थ के स्वरूप को विस्तार से समझाया। जैसे-जैसे व्यक्ति तत्त्व को समझने लगता है, वैसे-वैसे उसका चिंतन बदल जाता है। वे विषय और पदार्थ में उलझते नहीं हैं, सिर्फ जीवन निर्वाह के लिए उसका उपयोग करते हैं।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में व्यवस्था समिति से लक्ष्मीलाल सिरोहिया, प्रदीप आंचलिया, संतोष सिंघवी, शौर्य रांका, ज्ञानशाला प्रशिक्षिकों ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि पूज्यप्रवर के पास अखूट अमृत है और वे हमें बाँट रहे हैं।

✦ उपदेश सुनने की भावना भी अच्छी बात है। उपदेश की सौ बातें सुनी जाएँगी तो उसमें से दो-चार बातें जीवन में हृदयंगम भी हो सकती हैं, उतर भी सकती हैं।

✦ हम अहिंसा की साधना करते हुए कषाय को प्रतनु करने का प्रयास करें।

— आचार्यश्री महाश्रमण

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
30 अगस्त - 5 सितंबर, 2021

✦ दीर्घ जीवन पाने की कामना से पूर्व यह संकल्प करो कि मैं परोपकारयुक्त जीवन जीऊँगा।
—आचार्यश्री महाश्रमण

कन्या मंडल अधिवेशन

जैन शासन में तीर्थंकर अध्यात्म के अधिकृत व्यक्ति होते है : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, १६ अगस्त, २०२१

श्रावण शुक्ला अष्टमी, भगवान पार्श्व का मोक्ष कल्याण दिवस। परमात्मा प्रभु पार्श्व की स्तुति कर हम आत्मकल्याण के मार्ग पर अग्रसर हों। भारतीय ऋषि परंपरा के महर्षि आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में अध्यात्म और भौतिकता दोनों विद्यमान है और ऐसा लगता है कि ये दोनों हमेशा थी, है और हमेशा रहेगी।

आध्यात्मिकता और भौतिकता दोनों का कुछ अंशों में समावेश पुण्य के रूप में देखना हो तो तीर्थंकरों को देखा जा सकता है।

तीर्थंकर एक ऐसा व्यक्तित्व होता है, जिसमें शिखर की तो अध्यात्म की निष्पत्ति होती है और तीर्थंकर होने के कारण पुण्यवत्ता भी विशिष्टता को लिए हुए होती है। पुण्य और धर्म इन दोनों के संगम पुरुष मानो तीर्थंकर होते हैं। चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव को देखें, पुण्यवत्ता तो मिल जाए पर धर्म का वह उत्कर्ष उस पद की अवस्था में देखने को नहीं मिलता।

कोई-कोई तीर्थंकर अपने जीवन काल में चक्रवर्ती बन जाते हैं, फिर तीर्थंकर बन जाते हैं। परंतु चक्रवर्ती है, उस समय तीर्थंकर नहीं है और तीर्थंकर है, उस समय भौतिक चक्रवर्ती नहीं रहते। सोलहवें तीर्थंकर भगवान शांतिनाथ इसके उदाहरण हैं। उनकी पुण्यवत्ता और प्रखरता को लिए हुए थी।

ऐसा लगता है दुनिया में तीर्थंकर से बड़ा अध्यात्म का अधिकृत व्यक्ति दूसरा उनसे बड़ा संभवतः नहीं मिलता होगा। जैन शासन में तीर्थंकर अध्यात्म के अधिकृत व्यक्ति होते हैं। आचार्य तुलसी भले २२ वर्ष के थे, पर धर्मसंघ के अधिकृत व्यक्ति वे ही बने थे, हालाँकि उनसे बड़े उम्र व ज्ञान में और भी संत

रहे होंगे। दीक्षा पर्याय में बड़े रहे होंगे।

ठाणं आगम के नवें अध्याय के ६०वें सूत्र में बात बताई गई है कि श्रमण भगवान जो इस जम्बू द्वीप के भरत क्षेत्र के वर्तमान अवसर्पिणी काल के चौबीसवें और अंतिम तीर्थंकर थे। उनके तीर्थ के नौ जीवों ने तीर्थंकर नाम गोत्र कर्म अर्जित किया था। वे हैं—श्रेणिक, सुपार्श्व, उदायी, पोट्टिल अणगार, दृढ़ायू, श्रावक शंख श्रावक शतक, श्राविका सुलसा और श्राविका रेवती। इन नौं नामों में देखता हूँ साधु से श्रावक आगे चले गए।

ये नौं जीव आगे इसी भूमि, हमारे भरत क्षेत्र में आगामी तीर्थंकर बनेंगे। श्रेणिक-आगे पद्मनाभ नाम से प्रथम तीर्थंकर, सुपार्श्व-सूरदेव नाम के दूसरे तीर्थंकर, उदायी-सुपार्श्व नाम के तीसरे तीर्थंकर, पोट्टिल-स्वयंप्रभ नाम के चौथे तीर्थंकर, दृढ़ायू-सर्वानुभूति नाम के पाँचवें तीर्थंकर, शंख-उदय नाम के सातवें तीर्थंकर, शतक-शतकीर्ति नाम के दसवें तीर्थंकर, सुलसा-निर्ममत्व नाम के पंद्रहवें तीर्थंकर। ये आठों आगामी उत्सर्पिणी काल में आगामी चौबीसी में तीर्थंकर होंगे।

प्रश्न है इस सूत्र में नाम गौत्र कर्म शब्द आया है। तो नाम कर्म और गौत्र कर्म दोनों है क्या? एक जन्म के अंतराल से पहले ही तीर्थंकर नाम गौत्र कर्म का अर्जन कर लिया। तीर्थंकर बनेगा तो मनुष्य ही तो साथ में मनुष्य जन्म का भी बंध हो गया। आयुष्य का बंध एक जन्म के अंतराल से पहले ही हो गया कि वह मनुष्य बनेगा या नरक गति में मनुष्य का बंध होगा, यह एक प्रश्न है। चिंतन की बात है।

इससे यह स्पष्ट हो रहा है कि गृहस्थ जीवन में भी बहुत कुछ प्राप्त किया जा सकता है। गृहस्थ भी एक जन्म बाद तीर्थंकर बनने वाला बन सकता है। कैसी आत्मा की विधिवत्ता है। साधु को जो सफलता नहीं मिलती, गृहस्थ को मिल सकती है।

राजा श्रेणिक की बात को हम देखें एक ओर क्षायिक सम्यक्त्व वाला, आगामी हमारा प्रथम तीर्थंकर बनने वाला। भगवान महावीर के सदृश। उतना ही आयुष्य सब हू-ब-हू। दुनिया का महान व्यक्तित्व बनने वाला आज तो पहली नरक में विद्यमान है। कर्मवाद में कितनी निष्पक्षता है। न्यायालय में सब बराबर है। फल सबको भोगना पड़ेगा। जहाँ हिंसा है, निष्ठुरता है, तो कर्म का फल भोगना है।

नाम मात्र से कोई जिन नहीं है, स्थापना में तीर्थंकर वंदनीय है। तीर्थंकर का जन्म हो गया, उसी भव में तीर्थंकर बनने वाले हैं, पर वंदनीय नहीं है। भाव तीर्थंकर वंदनीय है। जो समवशरण में विराजमान है।

सुपार्श्व भगवान महावीर के चाचा थे। उदायी राजा कोणिक का पुत्र था। पोट्टिल दृढ़ायू, शंख, शतक भी तीर्थंकर बनने वाले हैं। सुलसा श्राविका जिसकी देव परिषद में प्रशंसा हो गई थी। देव ने परीक्षा की। सुलसा दृढ़ समत्व वाली श्राविका थी। रेवती श्राविका भी भगवान महावीर के स्वास्थ्य में सहयोग देने वाली थी। इस तरह भगवान महावीर के समय के नौ जीवों के तीर्थंकर नाम गौत्र कर्म बंध की बात बताई है।

कन्या मंडल अधिवेशन का शुभारंभ

इस प्रसंग पर पूज्यप्रवर ने फरमाया कि हमारे तेरापंथ श्रावक समाज की जो कन्याएँ हैं, उनके संदर्भ में अपनी बात विशेषतया बताने जा रहा हूँ। कन्या मंडल अभातेमम के अंतर्गत है, यह सुंदर बात है। पथदर्शन प्रशिक्षण पाने का सुंदर मौका मिल सकता है। पथ से विचलित होने से बचने का मौका मिल सकता है। उनको विकास का भी अच्छा मौका मिल सकता है।

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी ने कहा कि यह सतरहवाँ अधिवेशन है। कन्याओं ने अच्छा विकास किया है। इस अधिवेशन की थीम है—EVOL स्थायी विकास। गहराई से सोचकर आगे बढ़ना है। जो प्रगतियाँ की हैं, वो उल्लेखनीय है और विकास करना है। तेरापंथ समाज की कन्याएँ शिक्षा के क्षेत्र में उत्तरोत्तर आगे बढ़ रही हैं। साथ में कन्याओं को इस बात पर ध्यान देना है कि उनका आध्यात्मिक विकास हो। धार्मिक दृष्टि और तत्त्व-दर्शन की दृष्टि से विकास हो। वे तेरापंथ दर्शन को अच्छी तरह समझ सके।

कार्यक्रम के प्रारंभ में भीलवाड़ा कन्या मंडल ने EVOL थीम गीत की प्रस्तुति दी। अभातेमम की अध्यक्षता पुष्पा बैद ने अपनी बात रखते हुए श्राविका गौरव अलंकरण के लिए सौभाग देवी बैद-जयपुर एवं ललिता धारीवाल-रायपुर के नाम की घोषणा की। सीता देवी श्राविका प्रतिभा पुरस्कार के लिए खुशबू घोषल-कोयंबटूर, सोनल पीपाड़ा-बैंगलोर, राखी बैद-गंगाशहर, मंजु बेताला-पटना के नाम की घोषणा की।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में मुख्य नियोजिका जी ने बंधन मुक्ति के बारे में समझाया। सम्यक्त्व के लक्षणों के बारे में बताया कि हमारी श्रद्धा के संस्कार मजबूत हों। संवेग के कारण धर्म के प्रति अनुत्तर श्रद्धा प्राप्त हो जाती है, मोक्ष मार्ग प्रशस्त हो जाता है। संवेग सम्यक्त्व के लिए बीज का कारण बनता है।

साध्वीवर्या जी ने सुमधुर गीत 'जो अंतर में ही रमण करें---' का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **संदीप कोठारी** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**